संरक्षक

श्री श्रीश चन्द्र दीक्षित
मुख्य परामर्शदाता
पूर्व सांसद् व पूर्व पुलिस महानिदेशक

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल
राष्ट्रीय प्रधान
पूर्व सांसद (राज्यसभा), पूर्व पुलिस महानिदेशक

मे.ज.(से.नि.) विश्वास स. जोगलेकर
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान

संपादक

प्रो० सतीश चन्द्र

संपादक मंडल

डॉ. महेश चन्द्र
देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाध्याय,
प्रो० श्रीधर पन्त, डॉ. रामशरण गौड़

प्रकाशक व मुद्रक

देवेन्द्र मित्तल *(उपप्रधान)*

प्रकाशन स्थान

संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6,
रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110022

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 1000/-
		Annual 125/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 20

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	**:**	**Rs.**	**15000/-**
Inner Cover	**:**	**Rs.**	**12,000/-**
Full Page	**:**	**Rs.**	**10,000/-**
Half Page	**:**	**Rs.**	**5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
Sankatmochan Aashram, Sector-6,
Ramkrishna Puram, New Delhi-110022

मुद्रण स्थान

एक्सेलप्रिन्ट, सी-36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली-110 055

गौरव घोष

GAURAV GHOSH

द्विमासिक
BI-MONTHLY

वर्ष 12 अंक 5 **विषय सूची** **मार्गशीर्ष 2067 वि. दिसम्बर 2010**

'उठो और रामराज्य की स्थापना करो के हुँकार स्वर कवि सम्मेलन में गूँजे		- आवरण -2
नए साल के लिए एक जनवरी ही क्यों!	***-विनोद बंसल***	2
भारतीय भाषाओं के विरुद्ध षड्यंत्र	***-ब्रजकिशोर शर्मा***	3
मिट जाएगी हस्ती हमारी	***-तवलीन सिंह***	5
तुष्टीकरण के कारण लगी है घाटी में आग	**-ले.ज. एस.के.सिन्हा**	6
मुसलमानों को सबसे अधिक सुविधाएं भारत में	**-ए.एन.बिस्मिल**	7
आज़ादी या अलगाव	**-डॉ. वेद प्रताप वैदिक**	9
शत्रुओं के हमदर्द	***- बलबीर पुंज***	10
'ईमानदार' प्रधानमंत्री का भ्रष्टतंत्र	***-अश्विनी कुमार***	11
सरदार पटेल होंगे दुनिया में सबसे विराट		12
श्रीराम कथा में सुन्दर काण्ड का नाम सुन्दर काण्ड क्यों?	***-रघुनन्दन प्रसाद शर्मा***	13
मर्यादा की सीमा ही कीर्तिदायक	***-दीनानाथ मल्होत्रा***	14
हॉलैण्ड में रामचरितमानस का डच भाषा में प्रकाशन शीघ्र		15
रोज़गारोन्मुख पाठ्यक्रम अब हिन्दी में	***-अनन्तराम त्रिपाठी***	15
पुस्तक समीक्षा		16
मुलतान (पाकिस्तान) की बोली में कविता	***-डॉ. जगदीश बत्रा***	16
Republic Of Scams : A Choronology		17
Flying the Republic's flag	***-Arun Jaitley***	20
The so called "Hindu Terror"	***-Francois Gautier***	21
Review Article	***-S.G. S.***	22
2000-yr-old link ties Ayodhya, Korea	***-Rahul Datta***	23
Diary of Events, Select Articles, Book Reviews, Documentation and Letter		23-33

लेखों आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

OWNER : SANSKRITIK GAURAV SANSTHAN
Phone : 26195368, 26181315 E-mail <sgsdelhi05@gmail.com>
संस्थान की वेबसाइट देखें :- <www.hindusthangaurav.com>

उठो और रामराज्य की स्थापना करो के स्वर हुँकार कवि सम्मेलन में गूँजे

संदेश विहार, पीतमपुरा, नई दिल्ली में दिनांक 16 दिसम्बर 2010 को **सांस्कृतिक गौरव संस्थान** एवं **इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती**, दिल्ली (संबद्ध अखिल भारतीय साहित्य परिषद्) के संयुक्त तत्वावधान में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका केन्द्रीय विषय **'उठो और रामराज्य की स्थापना करो'** था। इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्रीय धारा के सुप्रसिद्ध चिंतक एवं साहित्यकार **आचार्य सोहनलाल 'रामरंग'** ने की। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि **स्वामी श्यामानंद सरस्वती** मुख्य अतिथि तथा **सुश्री मीरा अग्रवाल,** (अध्यक्ष, पदोन्नति एवं नियुक्ति, दिल्ली नगर-निगम) एवं **श्री नरेन्द्र बिन्दल** विशिष्ट अतिथि थे। इस कवि सम्मेलन में राष्ट्रीय भावनाओं की गूँज छाई रही तथा कवियों ने वर्तमान भारत में बढ़ रहे भ्रष्टाचार, महंगाई, सामाजिक बुराइयों, सामान्य व्यक्ति की पीड़ा आदि को व्यक्त करते हुए राम के आदर्शों और रामराज्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ करने वाले प्रमुख कवि थे सर्वश्री **होशियार सिंह 'संवर'** (बुलंदशहर), **डॉ. अशोक मधुप** (नोएडा), **डॉ. मदनलाल वर्मा 'क्रांत'** (नोएडा), **श्री जयसिंह आर्य** (दिल्ली), **श्री सत्यम् गर्ग** (दिल्ली), **श्री अली हसन** (दादरी), **सुश्री नेहा वैद्य** (गाजियाबाद) एवं **श्रीमती तूलिका सेठ** (गाजियाबाद)।

इस अवसर पर बोलते हुए **डॉ. रामशरण गौड़** (न्यासी, सांस्कृतिक गौरव संस्थान) एवं अध्यक्ष इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती ने सांस्कृतिक गौरव संस्थान के उद्देश्य, उसके क्रियाकलापों की चर्चा करते हुए भगवान् श्रीराम के उन आदर्शों और सद्‌गुणों पर प्रकाश डाला जिनके कारण वे भारत की पारिवारिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन मूल्यों की चेतना के आधार रहे हैं। श्रीमती मीरा अग्रवाल ने कहा कि वर्तमान में भारत में जो भ्रष्टाचार, महंगाई, दुराचार आदि बढ़ रहा है उसका एकमात्र समाधान भगवान् श्रीराम का आदर्श जीवन और उनकी वह लोकनीति है जिसने भारतीय परिवारों और समाज को सुमति, सौहार्द, सद्‌भावना और समरसता प्रदान की।

इस अवसर पर लगभग 250 श्रोता उपस्थित थे जिन्होंने न केवल कवि सम्मेलन का आनंद लिया बल्कि श्रीराम के आदर्शों के पालन के प्रति भी आस्था व्यक्त की।

डॉ. रामशरण गौड़

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः ।

उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन् मर्डितारं न विन्दते।

ऋग्वेद10-117-1

मृत्यु भूख से नहीं मिलती। जो भरपेट खाते हैं वे भी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। ईश्वर उसे आशीर्वाद देते हैं जो अपने धन को मिल बांटकर उपयोग करते हैं। वह व्यक्ति जो धन को दूसरों में बांटता नहीं है, वह किसी की मित्रता नहीं पा सकता है।

श्री सुरेन्द्र पटेल; सांसद् (राज्यसभा) की पुस्तक 'वेदाज़' से साभार

प्रकाशक : तपस फाउण्डेशन, श्रीलेखा भवन, पालडि ग्राम, अहमदाबाद-380 006

गौरव घोष

संगठन में ही शक्ति है।

Gaurav Ghosh

नए साल के लिए एक जनवरी ही क्यों!

-विनोद बंसल

तुष्टीकरण के कारण लगी है घाटी में आग

-ले.ज. (से.नि.) एस.के.सिन्हा

मुसलमानों को सबसे अधिक सुविधाएं भारत में

-ए.एन.बिस्मिल

आज़ादी या अलगाव

-डॉ. वेद प्रताप वैदिक

शत्रुओं के हमदर्द

-बलबीर पुंज

'ईमानदार' प्रधानमंत्री का भ्रष्टतंत्र

-अश्विनी कुमार

श्रीराम कथा में सुन्दर काण्ड का नाम सुन्दरकाण्ड क्यों ?

-रघुनन्दन प्रसाद शर्मा

हॉलैण्ड में रामचरितमानस का डच भाषा में प्रकाशन शीघ्र

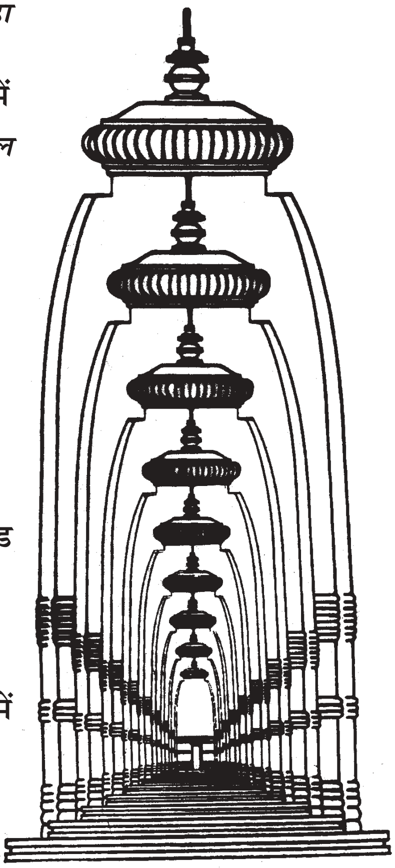

Republic Of Scams : A Choronology

Flying the Republic's flag

-Arun Jaitley

The so called 'Hindu Terror'

-Francois Gautier

The Call Eternal : B.P.Singhal Review Article

2000-yr-old link ties Ayodhya, Korea

-Rahul Datta

Diary of Events, Select Articles Book Reviews, Documentation, and Letter

"धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः"

मार्गशीर्ष 2067 वि. युगाब्द 5112 दिसम्बर 2010	द्विमासिक सांस्कृतिक गौरव संस्थान पत्रिका	वर्ष 12 अंक 5

नए साल के लिए एक जनवरी ही क्यों !

*-विनोदबंसल**

एक जनवरी के नजदीक आते ही जगह-जगह हैप्पी न्यू ईयर के बैनर व होर्डिंग लगने लगते हैं। जश्न मनाने की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती हैं। होटल, रेस्तरां, व पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। पोस्टर व कार्डों की भरमार के साथ दारू की दुकानों की भी चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएं दुर्घटनाओं में बदल जाती हैं और मनुष्य- मनुष्यों से तथा गाड़ियां गाड़ियों से भिड़ने लगते हैं। रात-रात भर जाग कर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जाएंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया।

जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने 1752ई. में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। 1752ई. से पहले ईस्वी सन् 25 मार्च से प्रारम्भ होता था किन्तु 18वीं सदी से इसकी शुरुआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नामों में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस, मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र आगस्टस के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोमन संवत् के मासों के आधार पर रखे गए। जुलाई और अगस्त, क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए, दोनों ही इकत्तीस दिनों के माने गए अन्यथा कोई भी दो मास 31 दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं हैं।

ईसा से 753 वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ जिसके मात्र दस माह व 304 दिन होते थे। इसके 53 साल बाद वहाँ के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे 355 दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से 46 वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे 365 दिन का बना दिया। सन् 1582 ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के 04 अक्टूबर को इस वर्ष का 14 अक्टूबर समझा जाए। आखिर क्या आधार है इस काल गणना का ? यह तो ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर 1952 में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के द्वारा पंचांग सुधार समिति की स्थापना की गई। समिति ने 1955 ई. में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु, तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर शक संवत् को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर 22 मार्च 1957 को इसे राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है, जबकि यूनान की काल गणना 3579 वर्ष, रोम की 2,756 वर्ष यहूदी 5,767 वर्ष, मिस्र की 28,670 वर्ष, पारसी 1,98,874 वर्ष तथा चीन की 9,60,02,304 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो **हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़ ३९ लाख ४९ हजार १०९ वर्ष है, जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गई है।**

जिस प्रकार ईस्वी सन् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सन् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और मुहम्मद साहब से है। किन्तु **विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है।** इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और, देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचांग पर आधारित होता है। भारतीय मान्यतानुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाए तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व **देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं।** यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। आइए, इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं -

ऐतिहासिक महत्त्व-

1 यह दिन सृष्टि रचना का पहला दिन है। इस दिन से एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 109 वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत् की रचना प्रारंभ की।

नए साल के लिए एक जनवरी ही क्यों !...

2 विक्रमी संवत का पहला दिन उसी राजा के नाम पर संवत् प्रारंभ होता था जिसके राज्य में न कोई चोर हो, न अपराधी हो, और न ही कोई भिखारी हो। साथ ही राजा चक्रवर्ती सम्राट् भी हो। सम्राट् विक्रमादित्य ने 2067 वर्ष पहले इसी दिन राज्य स्थापित किया था।

3 **प्रभु श्री राम का राज्याभिषेक दिवस :** प्रभु श्री राम ने भी इसी दिन को लंका विजय के बाद अयोध्या में राज्याभिषेक के लिए चुना।

4 **नवरात्र स्थापना :** शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात्, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। प्रभु श्री राम के जन्मदिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।

5 **गुरु अंगददेव प्रकटोत्सव :** सिख परंपरा के द्वितीय गुरु का जन्म दिवस।

6 **आर्य समाज स्थापना दिवस :** समाज को श्रेष्ठ (आर्य) मार्ग पर ले जाने हेतु स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी दिन को आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप में चुना।

7 **संत झूलेलाल जन्म दिवस :** सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरुणावतार संत झूलेलाल इसी दिन प्रकट हुए।

8 **शालिवाहन संवत्सर का प्रारंभ दिवस :** विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना।

9 **युगाब्द संवत्सर का प्रथम दिन :** 5112 वर्ष पूर्व धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ।

10 **डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार जन्म दिवस :** राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक थे।

प्राकृतिक महत्त्व-

1 वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

2 फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

3 नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके। आइये! विदेशी को फैंक स्वदेशी अपनाएं और गर्व के साथ भारतीय नव वर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनाएं तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

*पता- 329, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलास, नई दिल्ली

भारतीय भाषाओं के विरुद्ध षड्यंत्र

*-ब्रजकिशोरशर्मा**

भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है कि संघ की **सिविल सेवाओं की प्रारंभिक परीक्षा के प्रश्न-पत्रों में परिवर्तन किया जाए।** अभी तक अभ्यर्थी दो प्रश्न-पत्रों को हल करता था। दोनों ही वस्तुपरक होते थे। इसमें एक था साधारण ज्ञान का और दूसरा अभ्यर्थी के विकल्प के किसी विषय का। अब इस विषय वाले प्रश्न-पत्र के स्थान पर सन् 2011 से एक नया प्रश्न-पत्र होगा। उद्देश्य है प्रवणता या अभिवृत्ति जानना कि प्रत्याशी में प्रशासक बनने के गुण हैं या नहीं। इस प्रश्न-पत्र के 200 अंक होंगे जिसमें से लगभग 30 अंक अंग्रेज़ी समझने की कुशलता के लिए होंगे।

यह स्मरणीय है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यह मुद्दा अनेक बार उठाया गया कि संघ की सिविल सेवा की परीक्षा केवल उन सूक्ष्म अल्पसंख्यकों के लिए है जो अंग्रेज़ी माध्यम से अध्ययन करते हैं। जो भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं उनके लिए सरकारी नौकरी के द्वार स्थायी रूप से बंद हैं। यह विभेदकारी है क्योंकि बहुसंख्यकों के लिए नौकरी में प्रवेश का कोई अवसर नहीं है।

१८ जनवरी १९६८ को संसद् के दोनों सदनों ने सर्वसम्मति से एक संकल्प पारित किया। इसे F५/८/६५-०L संख्यांक दिया गया। इस संकल्प का पैरा 4 इस प्रकार है-

4. ...और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए;

यह सभा संकल्प करती है :

(क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेज़ी अथवा केवल हिन्दी अथवा दोनों, जैसी कि स्थिति हो, का उच्च-स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत: अपेक्षित होगा; और

(ख) कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात् अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की 8वीं सूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेज़ी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।

भारतीय भाषाओं के विरुद्ध षड्यंत्र...

1977 में डॉ. दौलतसिंह कोठारी की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई। डॉ. कोठारी इसके पहले विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1965) के अध्यक्ष रह चुके थे। इस समिति ने संघ लोक सेवा आयोग, कार्मिक विभाग आदि के विचारों को ध्यान में रखते हुए सर्वसम्मति से यह सिफारिश की कि परीक्षा का माध्यम भारत की प्रमुख भाषाओं में से कोई भी हो सकती है।

1979 में संघ लोक सेवा आयोग ने इन सिफारिशों को क्रियान्वित किया। इसका संपूर्ण श्रेय तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को है जिन्होंने स्पष्ट निदेश तुरंत दिए थे। **इस परिवर्तन का लाभ उन लोगों को मिला जो महानगरों से बाहर रहते थे या जो अंग्रेज़ी माध्यम के महंगे विद्यालयों में नहीं पढ़ सकते थे। उनके पास प्रतिभा थी, वे गुणवान थे, योग्य थे किन्तु अंग्रेज़ी माध्यम वाले 'कुलीन' लोगों ने उन्हें बाहर कर रखा था।**

गत 30 वर्षों में यह कभी नहीं सुनाई पड़ा कि जो भारतीय भाषाओं वाले प्रशासक आ रहे हैं वे किसी भी प्रकार से अंग्रेज़ी माध्यम वालों से कम हैं। किन्तु अब मैकाले के मानसपुत्र आक्रमण कर रहे हैं। छिपा कर एक दांव लगाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि सुधार हो रहा है। वास्तव में समता के स्थान पर विभेद और पक्षपात किया जा रहा है। ऐसा कोई अध्ययन या अनुसंधान नहीं हुआ जिससे यह निष्कर्ष निकले कि प्रवेश परीक्षा के स्तर पर अंग्रेज़ी की समझ होना भावी प्रशासक के लिए परमावश्यक गुण है। यह सर्वविदित है कि चयन के पश्चात् प्रत्येक चयनित अभ्यर्थी को आधारिक पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण दिया जाता है जिसकी अवधि 3 वर्ष होती है। इसके बाद भी वह अनेक विशेषित पाठ्यक्रमों में भाग लेता रहता है। प्रशिक्षण चलता ही रहता है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि **प्रतियोगी परीक्षाओं में एक अंक के कारण भारी अंतर आ जाता है। इस नए प्रश्न-पत्र में तो ३० अंक अग्रेज़ी ज्ञान को समर्पित हैं। स्पष्ट है कि इसका लाभ अंग्रेज़ी वालों को मिलेगा।**

इस तथाकथित प्रवणता या अभिवृत्ति की परीक्षा में कुछ भी मौलिक नहीं है। इसका प्रयोग गैर-सरकारी संस्थाएं और प्रबंधन संस्थान करते हैं। वहीं से यह नकल किया गया है। यह विचारणीय है कि क्या लोक प्रशासन और निजी उद्योगों का प्रबंधन एक ही है या उनमें भिन्न गुणों की अपेक्षा है। **इस नकल किए पाठ्यक्रम में चतुराई से छिपाकर अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञान को जोड़ दिया गया है। यह घोर आपत्तिजनक है।** यह परिवर्तन कोचिंग संस्थानों के लिए वरदान होगा; वहाँ धन की वर्षा होगी। वे अंग्रेज़ी वालों के ऋणी रहेंगे। विद्यार्थी के पास कोई विकल्प नहीं है। वह इतने सब अपेक्षित गुण कहाँ से कुछ मास में विकसित करेगा। ये गुण अर्जित करने में तो अनेक दशक लग जाते हैं।

संघ लोक सेवा आयोग के वार्षिक प्रतिवेदन यह कथा कहते हैं कि **हिन्दी और भारतीय भाषाओं के माध्यम से विशाल संख्या में परीक्षार्थी उत्तर देते हैं और यह संख्या निरंतर वृद्धिगत है।** इनकी संख्या अंग्रेज़ी वालों से अधिक है।

२००६ मुख्य परीक्षा

(क) हिन्दी	3306	(ग) अंग्रेज़ी	3937
(ख) अन्य भारतीय भाषाएं	250		
योग	3556		

२००७ मुख्य परीक्षा

(क) हिन्दी	3751	(ग) अंग्रेज़ी	4815
(ख) अन्य भारतीय भाषाएं	310		
योग	4069		

२००८ मुख्य परीक्षा

(क) हिन्दी	5117	(ग) अंग्रेज़ी	5822
(ख) अन्य भारतीय भाषाएं	381		
योग	5498		

इस प्रकार यह प्रस्तावित परिवर्तन -

(क) संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 में समाविष्ट समता के उपबंधों का उल्लंघन करता है। यह विभेदकारी है और एक गुट के लाभ के लिए है।

(ख) संसद् के 18 जनवरी 1968 के संकल्प और उसमें निहित भावना का अतिक्रमण और उपेक्षा करता है।

(ग) यह एक प्रतिगामी पग है जो डॉ. दौलत सिंह कोठारी समिति द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक सिद्धांतों के विपरीत है।

(घ) यह भारत के नागरिकों की बहुसंख्या को, संघ की सिविल सेवा परीक्षा में सम्मिलित होने और प्रतियोगिता में भाग लेने के अधिकार से वंचित करता है।

हम सभी भारतीय नागरिकों का जो सामान्य जन का हितैषी होने का दावा करते हैं या जो भारतीय भाषाओं के पक्षधर हैं यह कर्त्तव्य है कि इस प्रतिगामी कदम का प्राणपणसे विरोध करें। पुनः असमानता को प्रतिष्ठापित करने और अंग्रेज़ी वालों को लाभ पहुँचाने का यह प्रयास विफल किया जाना चाहिए।

**पूर्वअपरसचिव(विधिएवंन्यायमंत्रालय),भारतसरकार*

पूर्व अध्यक्ष, नेशनल बुक ट्रस्ट

मिट जाएगी हस्ती हमारी

-तवलीन सिंह

संसद में पिछले सप्ताह जब राष्ट्रपति ओबामा भारत की प्राचीन संस्कृति की तारीफ कर रहे थे, मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई। इसलिए नहीं कि मैं उनकी प्रशंसा से खुश नहींथी, **शर्मिंदगी इसलिए कि मैंने ऐसी बातें कभी किसी भारतीय राजनेता से नहीं सुनी हैं। ओबामा ने याद दिलाया कि भारतीय संस्कृति ने विचारों की दुनिया से लेकर विज्ञान की दुनिया की ऊँचाइयां छुई हैं। शून्य न होता, तो शायद आज कंप्यूटर की भाषा न होती। उन्होंने इशारा किया कि इस प्राचीन संस्कृति को आधार बनाकर भारत २१वीं सदी में अपनी विशेष जगह बना सकता है। क्या ऐसी बातें आपने हमारे किसी राजनेता से कभी सुनी हैं?**

हमारी संस्कृति की तारीफ जब सेक्यूलर राजनीतिज्ञ करते हैं, तो वे इस बात को ध्यान में रखते हुए करते हैं कि कहीं गलती से सुनने वाले यह न समझ बैंठे कि वे हिन्दुत्ववादी हैं। हिन्दुत्ववादी जब हमारी प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा करते हैं, तो वे सिर्फ मंदिरों-देवताओं की बातें करते हैं, ताकि जो भारतवासी हिन्दू नहीं हैं, उनको ऐसा लगे कि उनको किसी न किसी तरह इस प्राचीन विरासत से अलग रखा जा रहा है।

सेक्युलरवादी राजनीतिक दलों का क्योंकि राज ज़्यादा रहा है, उन्होंने यही ठीक समझा कि भारत की प्राचीन संस्कृति के बारे में जितनी कम बातें हों, उतना अच्छा है। सो न शिक्षा में उसे अहमियत दी गई, न पुरानी सांस्कृतिक किताबों को उन्होंने दोबारा प्रकाशित करवाने का प्रयास किया है और न ही कभी भारत के बच्चों को यह बताया है कि इतनी महान थी, प्राचीन भारत की संस्कृति कि उसका असर पश्चिम में यूरोप तक पहुँचा था और पूर्व में दक्षिण पूर्वी देशों के कोने-कोने तक। भारतीयता को भुलाकर आधुनिकता लाने का नतीजा यह है कि शहरों में अब कई ऐसे नौजवान भारतीय मिलते हैं, जो अपनी भाषा तक भूल चुके हैं। देहातों में जहाँ मातृभाषा से अभी तक रिश्ता नहीं टूटा है, भारतीय भाषाओं में किताबें इतनी मुश्किल से मिलती हैं कि यकीन से मैं दावा करती हूँ कि भारत के एक भी गांव में आपको किताबों की दुकान नहीं मिलेगी। बड़े गांवों में आजकल बहुत सारी दुकानें देखने को मिलती हैं, जिनमें आप फ्रिज, टीवी, कंप्यूटर तक खरीद सकते हैं, लेकिन किताबों की दुकान नहीं दिखेगी आपको कहीं। इस बात से हमारे कानों में खतरे की घंटे बजनी चाहिए, लेकिन हम हैं कि इन चीज़ों की परवाह तक नहीं करते।

उत्तर प्रदेश में दलित 'अंगरेजी देवी' का मंदिर बना रहे हें। इसके बारे में मैंने ब्रिटेन के टेलीग्राफ अखबार में पढ़ा। महत्वपूर्ण खबर है यह, लेकिन हमारे अखबारों ने ऐसा नहीं समझा। मैंने एक अखबार में इसका ज़िक्र देखा, तो उसमें इस बात पर ज़्यादा ध्यान दिया गया था कि सवर्णो को इस मंदिर के निर्माण में हिन्दू जातियों में विभाजन की साजिश दिख रही है। **समस्या जातिवाद की नहीं है, समस्या भारत की भाषाओं के खत्म हो जाने की है। अंगरेजी देवी का मंदिर इसलिए बनाया जा रहा है क्योंकि दलितों को विश्वास होता जा रहा है कि बिना अंगरेजी के वे आगे नहीं बढ़ पाएंगे।**

किसी देश की अपनी भाषाएं जब मिटना शुरू होती हैं, तो संस्कृति कैसे बच सकती है? आज किसी भी भारतीय शहर के मध्यमवर्गीय बच्चों से जब मैं मिलती हूँ तो ऐसा लगता है कि वे हर भाषा में बेजुबान हो गए हैं। ये बच्चे अक्सर ऐसे अंगरेजी स्कूलों में पढ़ते हैं, जहाँ वे न ढंग की अंगरेज़ी सीखते हैं, न ही मातृभाषा। दूसरी बात जो मुझे बहुत डराती है, वह यह है कि आज के बच्चे किताबें नहीं पढ़ते हैं। न अंगरेज़ी में, न किसी भारतीय भाषा में। फिल्में देखते हैं, टीवी देखते हैं। फिल्मी दुनिया की बात आई है, तो वहाँ का हाल सुनिए। एक मशहूर पटकथा लेखक ने हाल में मुझे बताया कि पटकथा और संवाद लिखने वाले आजकल अंगरेजी में लिखते हैं और फिर अनुवाद करवाते हैं किसी हिन्दीवाले से। यह उस दुनिया का हाल है, जहाँ कभी इस देश के सबसे बड़े शायर, सबसे अच्छे लेखक आया करते थे।

ऐसा चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं, भारत के बच्चों को भारत के बारे में सीखने के लिए अमेरिका के विश्वविद्यालयों में जाना पड़ेगा। वे दिन दूर नहीं, जब भारत की प्राचीन संस्कृति इतनी सिकुड़ कर रह जाएगी कि उसको देखने जाया करंगे हम संग्रहालयों में। अल्लामा इकबाल ने कहा था कभी, कुछ बात है कि *हस्तीमिटतीनहीं हमारी,सदियोंरहाहैदुश्मनदौरे-जहांहमारा।* लेकिन आज ऐसा लग रहा है कि आखिर वह दौर आ ही गया है, जब भारतीयता के मिटने के आसार दिखने लगे हैं। इसलिए राष्ट्रपति ओबामा का भाषण सुनकर शर्मिंदगी महसूस हुई थी मुझे। हम उनकी प्रशंसा के लायक नहीं हैं, क्योंकि हमने अपनी सदियों पुरानी, सोने से कीमती विरासत को इतिहास के कूड़ेदान में अपने हाथों से फेंक दिया है। है न शर्म की बात?

'अमर उजाला' की वेबसाइट से साभार

निवेदन

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के आजीवन सदस्य बनकर कृपया देश सेवा में योगदान करें। आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/-रुपये मात्र चेक या बैंक ड्राफ्ट से "सांस्कृतिक गौरव संस्थान" के नाम भेजें। सदस्यों को 'गौरव घोष' नि:शुल्क भेजा जाता है।

तुष्टीकरण के कारण लगी है घाटी में आग

-ले.ज. (से.नि.) एस.के.सिन्हा (पूर्व राज्यपाल)

जम्मू-कश्मीर में सर्वदलीय बैठक बुलाकर आग बुझाने के प्रयास शुरू हो चुके हैं, लेकिन असम और जम्मू-कश्मीर में राज्यपाल रहे लेफ्टिनेंट जनरल (से.नि.) श्रीनिवास कुमार सिन्हा इस तरह की बातचीत के बहुत दूरगामी सकारात्मक परिणाम नहीं देखते। दो दशक से ज्यादा समय तक बतौर सैन्य अधिकारी रहे और राज्यपाल के रूप में जम्मू-कश्मीर को भी करीब से देखने वाले सिन्हा साफ कहते हैं कि बातचीत से ज्यादा ज़रूरत ज़मीन पर कार्रवाई करने की है। **जम्मू-कश्मीर की असली समस्या है मज़हबी कट्टरता की नींव पर अलगाववाद का जिन्न।** दो साले पहले अमरनाथ यात्रियों के लिए ज़मीन आवंटन के मुद्दे पर बिगड़े हालात के समय जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल रहे एस.के. सिन्हा से हुई बातचीत के कुछ अंश -

प्र. घाटी फिर जल रही है...जिम्मेदार कौन...?

सबसे पहले हमारी गलत नीतियां...१९४७ से ही हमारे हुक्मरानों ने गलत फैसले लिए। सच्चाई से कटते रहे। सच से भागते रहे तो कोई स्पष्ट नीति ही हम नहीं बना सके।

प्र. कैसी सच्चाई?

जम्मू-कश्मीर की मूल समस्या है मज़हबी कट्टरता। जरूरत उसके स्रोतों यानी अलगाववादियों और ऐसी ताकतों पर प्रहार की है, लेकिन हम तो सिर्फ तुष्टीकरण की नीति पर चलते रहे।

प्र. आपका मतलब है कि बातचीत नहीं होनी चाहिए?

नहीं, बात आप खूब करें, लेकिन पहले अपनी नीति तो बनाएं। कोई रोडमैप तो हो। **दिल-दिमाग जीतने की कोई भी कोशिश तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि माहौल खराब करने वाले राष्ट्रद्रोही तत्वों पर सख्त कार्रवाई न की जाए।**

प्र. उमर अब्दुल्ला ने सर्वदलीय बैठक बुलाई है। क्या इसकी ज़रूरत नहीं है?

नहीं, बैठक करें। लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है कि जिन लोगों की वजह से घाटी के हालात बिगड़े हैं, पहले उन पर ज़मीनी कार्रवाई हो। **माहौल बिगाड़ने वालों पर सख्ती करें तो अपने आप बातचीत का वातावरण तैयार होगा।**

प्र. अशांति की तत्कालीन वजह आप क्या मानते हैं?

तुष्टीकरण की नीति। कश्मीरियों को ही नहीं, पाकिस्तानियों और अमेरिका को खुश रखने का रवैया। इस वजह से सीमा पार और अलगाववादी ताकतों ने मज़हबी कट्टरता को बढ़ाया और पूरा माहौल विषाक्त कर दिया। सैयद अली शाह गिलानी का हाथ बिल्कुल सामने है, लेकिन उसे गिरफ्तार करने की बात ही नहीं हो रही।

प्र. तो आपका कहना है कि सरकार अपनी प्रशासनिक ताकत का प्रयोग नहीं कर रही?

आपके सामने है। **अरे भाई सुरक्षा बलों पर जब पथराव होगा तो क्या वे बदले में माला पहनाएंगे? मगर कोसा सुरक्षा बलों को जाता है। क्या सेकुलर मीडिया और क्या राजनीतिज्ञ कोई भी सही बात नहीं करना चाहता।** जबकि असलियत यह है कि अगर जम्मू-कश्मीर में हालात काबू आए हैं तो वह सेना और सुरक्षा बलों की वजह से ही।

प्र. मगर सेना और सुरक्षा बलों पर कश्मीर में मानवाधिकार हनन के आरोप लगातार लगते रहे हैं?

यह एक कुप्रचार है, जिसे सबसे ज्यादा बढ़ावा दिया है अलगाववादियों और तथाकथित सेकुलर मीडिया ने। **दुनिया की किसी भी सेना की तुलना में भारतीय सेना का मानवाधिकार रिकार्ड सबसे बेहतर है।** पिछले 30 सालों में भारतीय सेना ने कश्मीर में कभी तोपखाने या हवाई ताकत का प्रयोग नहीं किया। **कुप्रचार इतना है कि मानवाधिकार आयोग के सामने सेना की १५०० शिकायतें गईं। इसमें से १४०० को मानवाधिकार आयोग ने गलत पाया।**

प्र. इसके बाद भी सेना या केन्द्रीय सुरक्षा बलों पर घाटी के लोगों का अविश्वास क्यों?

नहीं...चंद अलगाववादी नेताओं को हमारी व्यवस्था ने हावी होने दिया है। मज़हबी कट्टरता की नींव इतनी मज़बूत हुई है कि ये अलगाववादी अवाम के बड़े हिस्से को बहकाने में कामयाब हो जाते हैं। वरना लोकतंत्र में लोगों की दिलचस्पी इस बात का सबूत है कि वे भारत में ही रहना चाहते हैं। सरकार अगर इन अलगाववादी नेताओं को किनारे कर दे तो तस्वीर बदलते देर नहीं लगेगी।

प्र. मगर अलगाववादी नेताओं को किनारे के लिए भी तो बातचीत का रास्ता ही अपनाना पड़ेगा?

गुरेज बातचीत से नहीं है। सवाल है कि बातचीत कैसे हो, किन मुद्दों पर हो और किन लोगों से हो। मुद्दे तो खैर स्पष्ट हैं ही नहीं, उल्टे हो यह रहा है कि सरकार गिलानी और मीरवाइज़ जैसे अलगाववादी नेताओं को जबरन तरजीह देकर कश्मीरी मुस्लिमों के प्रवक्ता का रुतबा देती रही।

प्र. कैसे...?

गोलमेज वार्ताओं को ही देखिए। केन्द्र ने 2007 में वार्ता बुलाई तो अलगाववादी नखरे दिखाकर नहीं आए। फिर दुबारा **२००८ में फिर बैठक आयोजित की गई तो मीरवाइज़ ने कह दिया कि वह 'टॉम डिक हैरी' के साथ नहीं बैठ सकता। इस तरह उसने केन्द्र को नीचा दिखाया, जबकि खुद मीर वाइज़ की हैसियत एक सभासद का चुनाव जीतने की नहीं। इसके बावजूद उसे हम नेता बनाने पर क्यों तुले हैं?**

प्र. अगर ज्यादातर कश्मीरी अवाम अलगाववाद के पक्ष में नहीं है तो फिर इतने पत्थरबाज कहाँ से पैदा

तुष्टीकरण के कारण लगी है घाटी में आग ...

हो गए?

दो साल पहले याद करिए। उमर अब्दुल्ला जैसा युवा और पढ़ा-लिखा नेता भी अमरनाथ के मुद्दे पर बहक गया तो मजहबी कट्टरता के चंगुल में फंसे कम पढ़े-लिखे लोगों की भावनाएं भड़काना तो सबसे आसान है।

प्र. एक बड़ा तबका घाटी में मौजूद स्थिति के लिए उमर अब्दुल्ला सरकार को जिम्मेदार मान रहा है। कहा जा रहा है कि फारुक होते तो हालात इतने न बिगड़ते।

हाँ, फारुख अनुभवी हैं। वह शायद हालात संभाल लेते। मैं तो यह भी मानता हूँ कि **केन्द्र की कांग्रेस नेतृत्व वाली सरकार ने अपने नेता गुलाम नबी आजाद पर भी भरोसा करने के बजाए अलगाववाद की बात करने वाले मुफ्ती मोहम्मद सईद को ज्यादा तवज्जो देकर भी जम्मू-कश्मीर का भला नहीं किया।**

प्र. क्या कारण है कि केन्द्र सरकार हमेशा अलगाववादियों के प्रति नरम रुख अपनाती दिखती है?

एक अज्ञात भय उसे सताता रहता है। जब कश्मीर में आतंकवाद शुरू हुआ तो हमने सख्त कार्रवाई नहीं की। सेना को हम 400-500 गज आगे नहीं बढ़ने दे सके, क्योंकि डर था कि पाक के पास चोरी के परमाणु बम हैं। सरकार सिर्फ भारतीय कानून का ईमानदारी से पालन कराए तो कुछ दिक्कत नहीं होगी।

प्र. तो आपके हिसाब से समाधान क्या है?

जैसा कि मैंने पहले कहा कि तुष्टीकरण बंद कर दें। गलत तत्वों को सलाखों के पीछे डाल दें। हालात खुद सुधर जाएंगे।

प्र. आप भी राज्यपाल रहे तो इस दिशा में कुछ हुआ?

अपनी सीमाओं पर रहकर मैंने जो किया उसका बहुत फायदा हुआ। राज्य में 35 प्रतिशत हिन्दू, बौद्ध और सिख हैं। इसके अलावा 20 फीसदी गुर्जर और बकरवाल हैं। इस 55 फीसदी समूह का अलगाववादियों से कोई लेना-देना नहीं। 45 फीसदी कश्मीरियों में ही कुछ तबका है जो अशांति फैलाता है। बस इस तथ्य को ध्यान में रखकर मैंने कुछ काम किया। कई अवरोध खड़े हुए, लेकिन आतंकवाद में कमी लाने में हम सफल रहे।

'दैनिक जागरण', दिल्ली से साभार

सौजन्य से-श्री रामनाथ महेन्द्र

मुसलमानों को सबसे अधिक सुविधाएं भारत में

-ए.एन.बिस्मिल

विदेशी धन और प्रभाव से मुक्त रहना यही (भारतीय) मुसलमानों का धर्म है। सुख और संपन्नता के लिए भारत में रहने वाले मुसलमानों को संगठित होकर भारत के प्रति वफादारी का परिचय देना चाहिए। सभी प्रकार की अफवाहों से दूर रहकर, विदेशी ताकतों और धन से अलिप्त रहकर भारत के प्रति गद्दारी का भाव रखने वाले थोड़े से गिनेचुने असामाजिक मुस्लिमों से सदा दूर रहना चाहिए। सांप्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित करने वाले तथाकथित मुस्लिम नेता ही शांति के साथ संपन्नता की ओर बढ़ रहे सच्चे मुसलमानों के कट्टर दुश्मन हैं। ऐसे नेता मात्र अपनी कुर्सी बचाने के लिए दूसरों के घरों में आग लगाकर अपना हाथ सेकने को ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं।

मेरे प्रिय मुस्लिम बंधुओं! आज हम भारत जैसे हिन्दू बहुल देश में रहते हुए भी स्वतंत्रता से अपने पंथ के सिद्धांतों के अनुसार रहने को स्वतंत्र हैं। हम मुस्लिम विश्वविद्यालय शुरू करके उर्दू माध्यम से शिक्षा दे सकते हैं। अपने रीति-रिवाज़ के अनुसार एक साथ अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं, बे रोक-टोक व्यापार कर सकते हैं। इच्छानुसार अधिक से अधिक मस्जिदें और मदरसे बना कर इस्लाम का प्रचार कर सकते हैं। अल्पसंख्यक होने के कारण चुनावों तथा नौकरियों में विशेष स्थान प्राप्त करने और यहाँ तक कि देश की राजनीति में भाग लेकर राष्ट्रपति बनने तक की छूट इस हिन्दू बहुल देश भारत में है। **इतनी छूट दुनिया के किसी अन्य गैर-मुस्लिम देश में नहीं है। चीन में कोई भी मुसलमान एक से अधिक पत्नी नहीं रख सकता तथा दो से ज़्यादा बच्चे पैदा नहीं कर सकता।**

सिंगापुर में सभी कब्रें तोड़ दी गई हैं और विद्युत शवदाह गृह में मुर्दे जलाये जाते हैं। जापान में मुसलमानों को अपने मृत लोगों की कब्र बनाने की इजाज़त नहीं है। इस्राइल में कोई मुसलमान अपने पंथ का प्रचार नहीं कर सकता। नेपाल आदि देशों में कोई मुसलमान किसी भी प्रकार से किसी हिन्दू का धर्म परिवर्तन नहीं करा सकता। ऐसा करने वाले को कठोर दंड दिया जाता है।

आज इस हिन्दू धर्म प्रधान देश में मुसलमानों को जितनी सुविधा प्राप्त है उसका एक अंश भी सिख, जैन तथा बौद्ध आदि भारत सरकार की सहायता से धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता। संक्षेप में कोई भी सिक्ख या बौद्ध-हिन्दू, **मुस्लिम देशों में उनके धर्म या भाषा आधारित कोई विद्यालय नहीं खोल सकते और भारत में चल रहे अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय या जामिया विश्वविद्यालय की तरह हिन्दी माध्यम से शिक्षा नहीं दे सकते।**

हिन्दुस्थान में उर्दू माध्यम से चल रहे सामान्य विद्यालय तथा हज़ारों धार्मिक पाठशालाओं की तरह मुस्लिम देशों में ऐसा कोई संस्कृत-वेद विद्यालय शुरू नहीं किया जा सकता और किसी शासकीय विद्यालय में अपने धर्म के अनुसार अपने जुम्मा की नमाज़ की तरह छूट नहीं मिल

मुसलमानों को सबसे अधिक सुविधाएं भारत में..

सकती है।

कोई भी हिन्दू वहाँ हिन्दी में कामकाज नहीं कर सकता और ईद की तरह सरकार की ओर से रामनवमी, कृष्णाष्टमी, दशहरा या दीपावली का अवकाश नहीं दिया जाता।

हिन्दी या संस्कृत माध्यम से कोई भी हिन्दू किसी मुस्लिम देश में रेडियो या टी.वी. कार्यक्रम देख-सुन नहीं सकता। रामनवमी जैसे धार्मिक कार्यक्रमों को देखना-सुनना तो दूर रोजिंदा सामान्य समाचार भी अपनी मातृभाषा में नहीं सुन सकता।

हमारे मुस्लिमों के समान राष्ट्रपति चुना जाना तो दूर, वहाँ के हिन्दुओं को अल्पसंख्यक होने के कारण न तो राजनीति में भाग लेने की छूट है और न चुनाव लड़ने की। यहाँ तक कि अल्पसंख्यक के रूप में किसी स्कूल या कॉलेज में प्रवेश भी नहीं ले सकते।

वहाँ रहने वाले हिन्दुओं को अपने घर अथवा संस्था के नाम पर किसी अलग स्थान की माँग तो दूर, वे हिन्दू होने के नाते कोई छोटी सी भी नौकरी भी नहीं कर सकते।

भारत के सरकारी कार्यालयों में जिस तरह मुस्लिम राष्ट्रपति के चित्र लगते हैं उस तरह अथवा मुस्लिम देशों में लगाए जाने वाले शेख के चित्रों की तरह कोई भी भारतीय अपने हिन्दू नेता का चित्र नहीं लगा सकता।

भारत के राष्ट्रपति भवन में पाकिस्तान के जिया उल हक को नमाज़ पढ़ने की सुविधा दी गई थी उस तरह कोई भी हिन्दू शासकीय स्थान पर यज्ञ या हवन नहीं कर सकता।

अपने हिन्दू धर्म के अनुसार कोई हिन्दू बैण्ड बाजे के साथ न कोई जुलूस निकाल सकता है और न अपने ताजियों की तरह अपने धर्म का खुला प्रचार कर सकता है।

मीनाक्षीपुरम् की तरह वहाँ के हिन्दुओं के लिए किसी मुसलमान को हिन्दू बनाना तो दूर, खुले हाथ अपने धर्म का पालन करना भी असंभव है।

किसी हिन्दू के द्वारा उन मुस्लिम देशों में अपनी कोई धार्मिक पुस्तक वेद, शास्त्र, रामायण या गीता या अन्य कोई पुस्तक छापना या बेचना तो दूर किसी दुकान पर इन ग्रंथों को रखा भी नहीं जा सकता, आर्य समाज के सत्यार्थ प्रकाश पर तो पूर्ण प्रतिबंध है।

भारत में श्रीनगर जैसी मुस्लिम बहुसंख्यक सरकार की तरह इन अरब देशों में शराब की दुकान खोलना तो दूर, परन्तु यदि कोई शराब पीता पकड़ा जाता तो कोड़े मारने की कठोर सजा दी जाती है। मैं भारत में मेरे मुस्लिम भाइयों की कब्रों से बड़े-बड़े राजमार्ग अवरुद्ध देखता हूँ, परन्तु इन मुस्लिम देशों में कोई हिन्दू किसी एकान्त जंगल में भी अपने धर्मानुसार मंदिर, मठ या गुरुद्वारा के नाम पर एक ईंट भी नहीं लगा सकता।

कोई भी हिन्दू मुस्लिम देश में धोती पहनकर या किरपाण धारण करके काम नहीं कर सकता। बाहर तो ठीक, इन देशों में वह अपने घर में भी भयभीत रहता है। आपको पता होगा कि सऊदी अरब में आज भी कोई हिन्दू खालसा अथवा सिख प्रवेश नहीं कर सकता।

कोई हिन्दू वहाँ अपनी फैक्टरी या व्यापार के लिए ज़मीन नहीं खरीद सकता, किसी भी प्रकार का स्वतंत्र व्यापार नहीं कर सकता। किसी हिन्दू को यदि व्यापार करना हो तो वहाँ के स्थानीय मुसलमान को 51 प्रतिशत हिस्सा देकर ही व्यवसाय कर सकता है।

हिन्दुस्थान की आजादी के बाद हमारे और हिन्दुओं के बीच अनेक बार गौहत्या को लेकर झगड़े हुए हैं। झगड़ा कभी भी वर्ग के लिए लाभदायी नहीं है। सऊदी अरब में गौहत्या करने वाले को मौत की सजा दी जाती है। इस स्थिति में वहाँ गाय को कत्ल किए बिना पूर्णत: सफल शादियां होती हैं। यदि यहाँ के अपने मुसलमान भाई सऊदी अरब की तरह यहाँ भी गाय को न मारने का दृढ़ निश्चय कर लें तो भारत में हिन्दू और मुसलमान शांति से रह सकते हैं।

देश के कुछ देशद्रोही मुसलमानों को यह कह कर भड़काते हैं कि हिन्दुस्थान में इस्लाम सुरक्षित नहीं है। एक मुसलमान होने के नाते मैं यह समझता हूँ कि इस जैसा सफेद झूठ दूसरा कोई नहीं है। इस अफवाह की असलियत इसी बात से समझी जा सकती है कि 1947 के बाद हिन्दुस्थान में हज़ारों नई मस्जिदें, हज़ारों उर्दू माध्यम के विद्यालय अलीगढ़, जामिया-मिलिया, देवबंद जैसे मुस्लिम विश्वविद्यालय बेरोकटोक चल रहे हैं, जबकि पाकिस्तान में उँगलियों पर गिने जा सकने वाले दो-चार हिन्दू धर्मस्थान ही बाकी रहे हैं। पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ ऐसा व्यवहार होने के बावजूद यहाँ अनेक नई मुस्लिम संस्थाओं की हो रही रचना मुस्लिमों के साथ भारत सरकार भाईचारे के व्यवहार का उत्तम उदाहरण सिद्ध करता है, न कि अत्याचार का।

पाकिस्तान, ईरान, ईराक य सऊदी अरब आदि मुस्लिम देशों की क्रिकेट, फुटबाल या हाकी टीमों में हिन्दू खिलाड़ी नहीं खेल सकते, जबकि हिन्दुस्थान में प्रत्येक खेल की टीम में अपने बंधु हैं यहाँ तक कि एशिया कप में दुर्भाग्यवश हारने वाली हॉकी टीक का कप्तान एक मुसलमान जफर इकबाल ही था। इस पर से समझा जा सकता हे कि हिन्दुस्थान में अपने मुस्लिम बंधुओं को कितने अधिकार प्राप्त हैं।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखें तो सर्वांगीण उन्नति के लिए हिन्दुस्थान के प्रति वफादार रहना यह मुसलमानों का कर्तव्य है।

आज तो तथाकथित मुसलमान नेता विदेशों के इशारों पर नाच रहे हैं और अपनी सत्ता या धन के लिए मेरठ, मुरादाबाद, बड़ोदरा, अहमदाबाद, कश्मीर, चंबल, भिवंडी या मुंबई में सांप्रदायिक दंगे कर रहे हैं वे वास्तव में मुस्लिम मज़हब को कलंकित करके देश के प्रति गद्दार बनकर यहाँ अपने लिए ही काँटे बो रहे हैं। हमें इससे दूर रहना चाहिए।

सौजन्य से-श्री रामनाथ महेन्द्र, केन्द्रीय कोषाध्यक्ष, विहिप

आजादी या अलगाव

-डॉ. वेद प्रताप वैदिक

सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल की कश्मीर यात्रा बहुत सार्थक सिद्ध हो रही है। महाभारत के युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने कौरवों के साथ वार्ता में जो चतुराई दिखाई थी, वह अब श्रीनगर में भी दिखाई पड़ रही है। अलगाववादी नेताओं के घर जाकर मिलना लचीली कूटनीति का सुंदर उदाहरण है। इसी लचीलेपन को यदि हमारे नेता थोड़ा और आगे बढ़ा दें तो अंधी सुरंग के पार रोशनी दिखना शुरू हो सकती है।

कश्मीर के बागी नेता आखिर क्या मांग कर रहे हैं? आज़ादी? बम फेंकने वाले आतंकवादी क्या मांग कर रहे हैं? आज़ादी! पत्थर फेंकने वाले नौजवान क्या चाहते हैं? आज़ादी! अपने बच्चे की लाश हाथ में लिए सड़क पर उतरी कश्मीरी मां क्या मांग कर रही है? आज़ादी! यहाँ तक कि राशन की कतार में लगे लोग भी राशन नहीं, आज़ादी मांग रहे हैं। इधर हम हैं कि 'आज़ादी' शब्द सुनते ही भड़क उठते हैं। हम समझते हैं, यह राष्ट्रद्रोह है। यह पाकिस्तान की साजिश है। यह भारत को तोड़ने का षड्‍यंत्र है। यदि हमने कश्मीर को आज़ाद कर दिया तो देश में कई अन्य कश्मीर उठ खड़े होंगे।

इसका अर्थ क्या हुआ? क्या यह नहीं कि हमने कश्मीर को गुलाम बना रखा है और हम उसे कभी भी आज़ाद नहीं होने देंगे? यह गलत अर्थ हमारे दिमाग में इसलिए कौंधता है कि हमने 'आज़ादी' नामक शब्द का सही अर्थ समझने की कोशिश ही नहीं की। कश्मीर के संदर्भ में आज़ादी का सही अर्थ क्या है, यह मुझे 1993 में उस समय समझ आया, जब विएना के अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार सम्मेलन में कश्मीर के कई आतंकवादी नेताओं से एक साथ भेंट हुई। **प्रधानमंत्री नरसिंहराव ने डॉ. मनमोहन सिंह और अटल बिहारी वाजपूयी को संयुक्त नेता बनाकर भेजा था और मुझे अमेरिका यात्रा बीच में छोड़कर विएना जाने को कहा था। अटल जी और मैं रेस्तरां की मेज पर जाकर ज्यों ही बैठे, ८-१० कश्मीरी बागी नेताओं ने हमें घेर लिया और बहस करने लगे। उन्होंने कहा 'हमें आज़ादी चाहिए' मैंने कहा-'मुझे भी चाहिए। आप आज़ाद रहें और मैं गुलाम रहूं, यह कैसे हो सकता है? मुझे जितनी आजादी दिल्ली में है, उतनी आपको श्रीनगर में मिले, ऐसी लड़ाई में मैं आपके साथ हूँ। आप कहते हैं कश्मीर को आजाद करो। मैं कहता हूँ कि सिर्फ कश्मीर को ही क्यों, भारत के सभी प्रांतों को आजाद क्यों न करें? बाकी प्रांत गुलाम क्यों रहें?'**

इन तर्कों को सुनकर वे हतप्रभ रह गए। लेकिन उनमें से ज्यादातर मुझसे लाहौर, इस्लामाबाद और पेशावर में मिल चुके थे। उनमें से दो ज़रा खुले। एक ने कहा कि हम कश्मीर को पाकिस्तान से मिलाना चाहते हैं और दूसरे ने कहा कि हम कश्मीर को अलग राष्ट्र बनाना चाहते हैं। मैंने कहा कि इसका कश्मीर की आज़ादी से क्या लेना-देना है? आप आज़ादी चाहते हैं या अलगाव चाहते हैं? उनमें से तीन-चार ने एक साथ कहा-'अलगाव ही आज़ादी है।'

मैंने उनका ध्यान तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो के ताजा बयान की तरफ आकर्षित कराया, जिसमें उन्होंने कहा कि 'कश्मीर के तीसरे विकल्प यानी कश्मीर न भारत के साथ रहे और न पाकिस्तान के। वह स्वतंत्र राष्ट्र की तरह रहे। तीसरा विकल्प यानी अलगाव। पाकिस्तान इस विकल्प का सबसे बड़ा दुश्मन है। **मैंने उनसे पूछा कि पाकिस्तान ने जो कश्मीर कब्ज़ाया हुआ है, उसे वह 'आज़ाद कश्मीर' कहता है, वह कश्मीर कितना 'आज़ाद' है?**

जो कश्मीर भारत के साथ है, उसे हम 'आज़ाद' कहने का ढोंग नहीं करते। हां, उसका विशेष दर्जा मानते हैं। यह विशेष दर्जा न होता तो भी वह वास्तव में आज़ाद ही होता, जैसे कि भारत के अन्य प्रांत हैं। **अलग होने का मतलब आज़ाद होना नहीं है। यहाँ अलगाव तो शुद्ध गुलामी है।** अलगाव दो प्रकार से हो सकता है-एक तो कश्मीर का **पाकिस्तान के साथ विलय और दूसरा उसका सार्वभौम पृथक राष्ट्र की तरह रहना। पाकिस्तान में विलय से कश्मीरियों को क्या मिलेगा? सैनिक तानाशाही, सामंतवाद, आतंकवाद, बेकारी, भुखमरी! खुद पाकिस्तान जबसे पैदा हुआ है, किसी न किसी महाशक्ति का दुमछल्ला बना रहा है।** कश्मीर क्या दुमछल्ले का दुमछल्ला बनना चाहता है? क्या इसे कोई आज़ादी कहेगा? पाकिस्तान के कई निर्भीक विद्वानों ने तथाकथित 'आज़ाद कश्मीर' को पाकिस्तानी पठानों और पंजाबियों के लिए सदा हाजिर 'विराट वेश्यालय' कहा है। 'आज़ाद कश्मीर' के प्रधानमंत्री सरदार कय्यूम खान को मैंने पहली मुलाकात में 'महामहिम प्रधानमंत्री' कहा तो वे तपाक से बोले-'मैं तो म्युनिसीपैलिटी का चेयरमैन भी नहीं हूँ।' मैंने उनसे कहा कि आप कहते हैं कि हमारे कश्मीर में हम जनमत संग्रह करा लें, आप अपने कश्मीर में पहले क्यों नहीं करवा लेते? उन्होंने कहा -पाकिस्तान की सरकार ऐसा कभी होने ही नहीं देगी। वास्तव में पाकिस्तान फौज उसे अपने बूटों तले दबाए रखेगी। भारतीय कश्मीर का पाकिस्तानी कश्मीर में विलय कश्मीरियों की आज़ादी को बढ़ाएगा या गुलामी को?

यदि कश्मीर अलग राष्ट्र बन जाए तो वह जिंदा कैसे रहेगा? सबसे पहले तो पाकिस्तान उसे कच्चा चबा जाएगा। अमेरिका और चीन भी उसे इज्जत से नहीं रहने देंगे। गरीब की जोरू! वह स्वतंत्र राष्ट्र नहीं, अंतर्राष्ट्रीय षड्‍यंत्रों का अड्डा बन जाएगा। कश्मीर के पास न पैसा है न आमदनी है, न फौज है। पाकिस्तान के पास यह सब कुछ था, लेकिन उसका हश्र क्या हुआ? वह एक 'विफल राष्ट्र' बनकर रह गया। क्या कश्मीर एक बदतर पाकिस्तान बनना चाहता है? अलग होकर पाकिस्तानियों को क्या मिला? उन्होंने कौन-से तीर मार लिए? वे ६३ साल बाद भी फौज की गुलामी में रह रहे हैं। हम कश्मीर को गुलामी की भट्टी में क्यों झोकेंगे?

इसीलिए अलगाववादी कश्मीरी नेताओं को हमें दो-टूक शब्दों में कह देना चाहिए कि अलगाव की बात वे बिल्कुल भूल जाएं, लेकिन अगर वे आज़ादी चाहते हैं, सच्ची आज़ादी, तो खुलकर बात करें। बिना किसी

आजादी या अलगाव ...

शर्त बात करें। जितनी आज़ादी उन्हें आज है, उससे भी कहीं ज़्यादा दी जा सकती है। सन् 1998 में भारत जितना समर्थ था, आज उससे कई गुना ज़्यादा समर्थ है। आज़ादी का दुरुपयोग होते ही दोषियों पर वह कहर बरपा सकता है। भारत सरकार सभी कश्मीरियों से बात करना चाहती है, इसका अर्थ क्या है? वह मानती है कि कश्मीर में विवाद है। विवाद है, इसीलिए संवाद है। सैयद अली शाह गिलानी कहते हैं कि फौज हटा लें। ठीक है, हटा लेते हैं, लेकिन फिर भी हिंसा हुई तो जिम्मेदार कौन होगा? तब फौज दोगुनी ताकत से घुसेगी। क्या वह गलत होगा? यह मौका है, जबकि कश्मीरियों के घावों पर मरहम लगाया जाना चाहिए। उनकी हर मांग और हर सुझाव पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उनकी हर बात पर सहानुभूतिपूर्ण विचार होना चाहिए, जिससे वे महसूस कर सकें कि वे आज़ाद हैं, लेकिन उन्हें यह भी बता दिया जाना चाहिए कि आज़ादी का मतलब अलगाव नहीं है।

(लेखक भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं)

NEED इंडियाई-8,कविनगरऔद्योगिकक्षेत्र,गाजियाबादके वर्ष-1, अंक-5, अक्टूबर 2010 से साभार

शत्रुओं के हमदर्द

शत्रु संपत्ति अधिनियम में संशोधन के प्रस्ताव पर सवाल खड़े कर रहे हैं : बलबीर पुंज

आखिर यह वोट बैंक की राजनीति देश को कहाँ ले जाएगी? पिछले दिनों मंत्रिमंडल ने शत्रु संपत्ति कानून (1968) में संशोधन करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। **उपरोक्त कानून के अंतर्गत देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए लोगों की संपत्ति को शत्रु संपत्ति घोषित किया गया था।** गौर करने योग्य बात यह है कि 1965 में भारत-पाक युद्ध के बाद पाकिस्तान से जान-बचाकर आए हिन्दुओं की संपत्ति हड़पने के लिए पाकिस्तान सरकार द्वारा बनाए गए कानून की प्रतिक्रिया में यह अधिनियम बनाया गया था। **पाकिस्तान ने हिन्दुओं की संपत्ति को जहाँ बेच डाला वहीं भारत सरकार ऐसी संपत्तियों की रक्षक बनी रही।** परेशानी तब शुरू हुई, जब पाकिस्तान जा चुके लोगों के वारिस अचानक सामने आ गए। संसद के शीतकालीन सत्र में लाए जाने वाले **इस संशोधन विधेयक का मकसद शत्रु संपत्ति के तहत कब्जे में ली गई संपत्ति पाकिस्तान चले गए मुसलमानों के कानूनी उत्तराधिकारियों को सौंपना है।**

स्वाभाविक प्रश्न यह है कि जिन्होंने अपनी राष्ट्रनिष्ठा बदल ली हो, उनके वारिसों को इस देश में किस आधार पर अधिकार दिया जा सकता है? विभाजन के दौरान बड़ी संख्या में हिन्दू पाकिस्तान से जान बचाकर भाग आए और जम्मू व उधमपुर आदि जगहों पर शरण ली। बाद में उन्हें भारत की नागरिकता मिली और वे लोकसभा चुनावों में मतदान के अधिकारी भी हुए, किन्तु उन्हें जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनाव में मतदान का अधिकार नहीं है। **जो सेक्युलर तंत्र पिछले साठ साल में पाकिस्तान से जान बचाकर आए हिन्दुओं को उनके ही देश में उनका मौलिक अधिकार न दिला पाया और जिसने कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास की चिंता नहीं की, वह एक झटके में उन लोगों को हज़ारों करोड़ की संपत्ति देने को लालायित है, जो इस देश का तिरस्कार कर 'दर-उल-इस्लाम' के लिए कूच कर गए थे?** क्यों ? उपरोक्त कानून में संशोधन करने के पीछे बड़ा कारण **महमूदाबाद के राजा (अमीर अली खान, मुस्लिम लीग के कोषाध्यक्ष व मोहम्मद अली जिन्ना के दाहिने हाथ) के वंशज को राहत देना है, जो करीब २४ हज़ार करोड़ की संपत्ति का मालिकाना हक सर्वोच्च न्यायालय से प्राप्त कर चुके हैं।** जिस समय शत्रु संपत्ति अधिनियम, 1968 लागू हुआ, अमीर खान जिंदा थे। उन्होंने तब तक अपनी संपत्ति किसी के नाम नहीं की थी। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने राजा महमूदाबाद की संपत्तियां अपने कब्जे में ले उन्हें संरक्षक के हवाले कर दिया। अमीर अली खान के बेटे अमीर मोहम्मद खान ने इन संपत्तियों के स्वामित्व का मुकदमा सर्वोच्च न्यायालय में जीत लिया, किन्तु अदालत के निर्णय में उपरोक्त कानून अवरोध बन रहा था। कट्टरपंथियों का तर्क था कि इस कानून की आड़ में मुसलमानों का शोषण हो रहा है।

भारत का रक्तरंजित विभाजन आबादी के हस्तांतरण की शर्त पर तो हुआ नहीं था, फिर भारत से पाकिस्तान चले जाने वालों की आखिर मानसिकता क्या थी? पाकिस्तान चले जाने वालों ने यदि भारत को दारूल-हर्ब समझा तो कुछ ने यहीं बसकर कुफ्र का कलंक क्यों मोल लिया? **जो कल तक मज़हब के आधार पर पाकिस्तान के प्रबल पैरोकार थे, वे आज़ादी के बाद रातोरात कांग्रेसी बन गए।** क्यों?

पाकिस्तान सृजन के पैरोकारों को यह गिला था कि हिन्दूबहुल कांग्रेस में मुसलमानों के हित सुरक्षित नहीं है। मुस्लिम लीग संयुक्त प्रांत, बिहार, मध्य प्रांत और मुंबई की कांग्रेस सरकार पर मुस्लिम उत्पीड़न का आरोप लगाकर मुसलमानों को एकजुट करने में पहले से ही लगी थी। उसका आरोप था कि कांग्रेस मुसलमानों की मज़हबी मान्यताओं में हस्तक्षेप कर रही है, उनकी अनिच्छा के बावजूद उर्दू की जगह हिन्दुओं की बोली हिन्दी थोप रही है। भारत माता की जय और वंदे मातरम् को मुसलमानों की संस्कृति पर चोट बताया गया। कांग्रेस को हिन्दू बनियों की पार्टी बताते हुए उस पर हिन्दू राज थोपने का आरोप लगाया गया। क्या यह विडंबना नहीं है कि जो लोग अंग्रेज़ों का साथ देते हुए जिन गालियों और विशेषणों से तब कांग्रेस गरियाते थे, आज़ादी के बाद वही गालियां पहले जनसंघ और अब भाजपा सहित अन्य राष्ट्रनिष्ठ तत्वों के लिए प्रयुक्त होती हैं?

पीरपुर (उत्तर प्रदेश) के राजा, मो. मेहदी राजा सैयद ने सन् १९३८ में एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें कहा गया कि हिन्दुओं से ज्यादा जालिम दूसरा नहीं हो सकता।... हम मुसलमान समझते हैं कि

शत्रुओं के हमदर्द ...

कांग्रेस के बहुसंख्यक सदस्य हिन्दू हैं, जो हिन्दू राज की बहाली की राह देख रहे हैं। रिपोर्ट में कांग्रेसी झंडे, वंदे मातरम्, गौरक्षा और हिन्दी के प्रयोग को मुसलमानों के नागरिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर हमला बताया गया। इसके बाद शरीफ समिति रिपोर्ट (1938) और फजलुल हक रिपोर्ट (1939) में भी इसी तरह का प्रलाप किया गया। महमूदाबाद के राजा, जो सन् 1937 से ही उत्तर प्रदेश के मुस्लिम लीग के बड़े नेता थे, 1970 में लिखा था, 'मुसलमानों में आम राय यह थी कि हिन्दू राज का समय आ गया है....।' अलग पाकिस्तान के लिए मुसलमानों का भयादोहन करने में सर सैयद अहमद खान द्वारा स्थापित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने बड़ी भूमिका निभाई। अक्टूबर, 1939 में एएमयू के छात्रों को संबोधित करते हुए लियाकत अली खान ने कहा था, 'हम स्वतंत्र मुस्लिम कौम पाने की लड़ाई में हर तरह का असलहा आपसे पाने की उम्मीद करते हैं।' अक्टूबर, 1944 में राजा महमूदाबाद ने अलीगढ़ में 'लीग कैंप' की स्थापना की और अलग पाकिस्तान की मुहिम के लिए इसमें एएमयू के डॉ. जफरूल हसन, डॉ. अफजल हुसैन कादिरी, जमीलुद्दीन अहमद, एबीए हलीम आदि शिक्षकों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

विभाजन के बाद भारत में रह गए पाकिस्तान सृजन के इन्हीं पैराकारों ने कांग्रेस का दामन थाम लिया। पीरपुर के राजा के पुत्र सैयद अहमद मेंहदी 1957 से लेकर 1967 तक कांग्रेस के सांसद रहे। कृषि मंत्रालय में संसदीय सचिव के साथ वह केन्द्र में इस्पात व खान मंत्री भी थे। नवाब **मो. इस्माइल खान, बेगम ऐेजाज रसूल, खलिक जम्मुन, नफीस उल हसन, ताहिर मोहम्मद, ताजमुल हुसैन, सैयद हुसैन इमाम, सादुल्लाह, मोइनुल हक, एचएस सुहरावर्दी** (जिनके राज में अगस्त 1946 में कोलकाता की सड़कें हिन्दुओं के खून से लाल हुई थीं), **अब्दुल हमीद खान आदि अलग पाकिस्तान के मुस्लिम लीगी पैरोकारों ने आज़ाद भारत में कांग्रेस के झंडाबरदार बन मुसलमानों की रहनुमाई की।** इन सब मुस्लिम लीगी सेकुलरिस्टों के समावेश से आजादी के के पूर्व तथाकथित सांप्रदायिक कांग्रेस से एक नए ब्रांड का 'सेक्युलरिज़्म' विकसित हुआ। **शत्रु संपत्ति अधिनियम में संशोधन कर संप्रग सरकार वस्तुतः उसी ब्रांड के सेकुलरिज़्म को आगे बढ़ा रही है।**

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दिनांक 26.10.2010 से साभार

'ईमानदार' प्रधानमंत्री का भ्रष्टतंत्र

-अश्विनी कुमार

हमारे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की ईमानदारी का ढिंढोरा पीट कर कांग्रेस पार्टी संसदीय जांच समिति से इस तरह भागने की कोशिश कर रही है जैसे विपक्ष सलीब पर ईसा मसीह को टांगने की कोशिश कर रहा हो मगर क्या यह देश जुलाई 2008 में बुलाए गए संसद के उस विशेष सत्र की घटना को भूल सकता है जब अमेरिका के साथ होने वाले परमाणु करार पर लोकसभा की स्वीकृति की मुहर लगवाने के लिए अल्पमत में आयी मनमोहन सरकार ने विपक्ष में बैठे सांसदों का मत खरीदा था और लोकसभा की मेज पर नोटों के बंडल रखे गए थे? तब कौन-सी ईमानदारी का परिचय इस देश की जनता को मिला था? क्या ईमानदार की परिभाषा यह है कि महात्मा गांधी के तीन बन्दरों की तरह बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो पर अमल करते हुए हर बुरे काम को होते हुए देख कर दीवार की तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ! डॉ. मनमोहन सिंह इस देश के प्रधानमंत्री हैं कोई कुटिया में बैठे भगवद् भजन करने वाले साधु नहीं कि हर बात को हरि-इच्छा पर छोड़ कर देश की सरकार चलाते रहें और अपने ईमानदार होने का सबूत देते रहें। **यह कैसी ईमानदारी है जो भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे एक अफसर को देश का मुख्य सतर्कता आयुक्त बनाने के लिए मजबूर करती है? यह कैसी ईमानदारी है जो अपने ही मंत्रिमंडल के एक मंत्री से यह नहीं कह पाती कि २-जी स्पैक्ट्रम के लाइसेंस तो बांटो मगर ज़रा यह भी ध्यान कर लो कि इसमें देश का नुक्सान न हो? यह कैसी ईमानदारी है जो परमाणु दायित्व विधेयक को झटके से संसद में पारित कराने की कोशिश करती है और जब इस पर विवाद उठता है तो इस विधेयक में संशोधन कर दिया जाता है?** इस विधेयक को पारित कराते समय संसद को विश्वास दिलाया जाता है कि परमाणु हादसे के होने पर मुआवज़े के निपटारे के लिए भारत को अंतर्राष्ट्रीय संधि से जुड़ने की कोई जल्दी नहीं है मगर अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के भारत आने से पहले ही विएना में इस संधि पर भारत हस्ताक्षर कर देता है? **क्या ईमानदारी यह होती है कि राष्ट्रमंडल खेल आयोजन के नाम पर रोज नए-नए घोटाले उजागर होते रहें और प्रधानमंत्री इनके खत्म होने के बाद एक जाँच समिति गठित कर दें? क्या ईमानदारी यह होती है कि क्रिकेट के नाम पर आईपीएल की कोच्चि टीम को खरीदने के लिए उसके ही मंत्रिमंडल का सदस्य बीच रास्ते में ही पकड़ लिया जाए? क्या ईमानदारी इसे कहते हैं कि भरी संसद में जब उसके ही मंत्रिमंडल का सदस्य २-जी स्पैक्ट्रम लाइसेंस घोटाले पर विपक्षी सांसदों से यह कहे कि मुझे क्यों पकड़ते हो, मैंने तो सारा काम अपने सरपरस्त प्रधानमंत्री की जानकारी में लाकर ही किया है और प्रधानमंत्री चुपचाप बैठा रहे? दरअसल हकीकत यह है कि डॉ. मनमोहन सिंह के रूप में कांग्रेस पार्टी के खानदारी राज को एक ऐसा मोहरा मिल गया है जो उसका उपयोग मनचाही जगह पर जैसे चाहे वैसे कर सकता है** मगर यह देश मुर्दा इंसानों की बस्ती नहीं है। पूरी दुनिया सबसे जवान मुल्क की नौजवान पीढ़ी को कांग्रेसी खानदानी विरासत के मायाजाल में नहीं बांध सकते और प्रधानमंत्री पद पर किसी कठपुतली को नहीं बैठा सकते। **कौन नहीं जानता कि मनमोहन सिंह दुर्घटनावश वित्तमंत्री बनाए गए थे और उनकी ही वित्तीय नीतियों के चलते भारत के कृषि क्षेत्र को कंगाल कर दिया गया था। कौन नहीं जानता कि पं.**

'ईमानदार' प्रधानमंत्री का भ्रष्टतंत्र ...

नेहरू की आर्थिक नीतियों की बुनियाद पर खड़े होकर ही इस देश ने विश्व का सबसे बड़ा बाज़ार बनने की क्षमता अर्जित की थी मगर मनमोहन सिंह की आर्थिक नीतियों ने तो अस्पतालों को भी होटलों में तब्दील करके गरीब आदमी से बीमारी में इलाज कराने का हक तक छीन लिया। वह कांग्रेस किस मुंह से भ्रष्टाचार से निपटने की बात कर सकती है जिसने अपना प्रधानमंत्री ही ऐसे कमज़ोर राजनीति से बेजान व्यक्ति को चुना है जिससे उसका भ्रष्टाचार बदस्तूर जारी रहे। इसका प्रमाण तो महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण हैं जिन्होंने मुंबई में केवल तीन-चार फ्लैटों के लिए ही अपना ईमान बेच दिया और ईमानदार मुख्यमंत्री का क्या हाल आज के कांग्रेसी निज़ाम में होता है इसका प्रमाण श्री के.रोसैया हैं जिन्होंने झुंझला कर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद ही छोड़ दिया मगर कांग्रेसी इसका गुणगान नहीं करेंगे क्योंकि यह त्याग थोड़े ही है? यह तो स्वास्थ्य की वजह से उन्होंने इस्तीफा दिया है मगर मेरा दावा है कि 78 साल के रोसैया अगर आज भी अपनी बलिष्ठ कद-काठी के अनुरूप किसी 20 साल के नौजवान को चपत लगा दें तो वह धराशायी हो जाएगा। यह पलायनवाद की पराकाष्ठा है। **कांग्रेसियों का पलायनवाद भाजपा के पलायनवाद से थोड़ा अलग किस्म का है। इन्होंने मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर यह सोच कर बैठाया कि राज हमारा रहेगा और नाम बादशाह का होगा।** इन्होंने मोतीलाल नहेरू, जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गांधी की शानदान विरासत के बाद राजीव गांधी, सोनिया गांधी और **इसके बाद राहुल गांधी को इसीलिए युवा नायक के रूप में महिमा मंडित करना शुरू किया जिससे सत्ता के सारे सुख बिना सत्ता में रहते हुए मिल सकें अगर क्या यह देश सोया हुआ है जो यह तक नहीं समझ सकता कि राजनीति के ये धुरंधर प्रतीक जो उसके सामने पेश किए जा रहे हैं वे नकल से इम्तिहान पास करने वाले लोग हैं।** इनमें तो इतनी कूव्वत नहीं कि वे प्रश्नपत्र का उत्तर अपने ज्ञान के बूते पर लिख सकें। **और देखिए क्या संगत बिठाई गई कि अपने जैसे ही उधार के कांग्रेसी मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बना उनके मुंह से ही कहलाया गया कि कांग्रेस का नया युवा नायक पूरे देश की आशा की किरण है मगर बिहार की जनता ने बता दिया कि पीतल पर सोने का पानी एक समय के बाद उतरता ही है। इसलिए कांग्रेसियों जागो और अपने पैरों पर खड़ा होना सीखो।** वरना पूरा देश ही तुम्हारे लिए बिहार बन जाएगा। मनमोहन सिह के भ्रष्ट तंत्र में इस देश को रसातल में जाने से नहीं रोका गया तो कांग्रेस का नामलेवा भी नहीं बचेगा।

'पंजाब केसरी' दिल्ली, दिनांक 28-11-2010 से साभार

सरदार पटेल होंगे दुनिया में सबसे विराट

अखंड भारत के शिल्पी लौहपुरुष सरदार पटेल की १८२ मीटर ऊँची प्रतिमा 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' का सपना गुजरात में साकार होगा। सरदार सरोवर बांध के पास बनने वाली यह स्मारकनुमा प्रतिमा न्यूयार्क की स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी से दोगुनी और दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा होगी। यह विराट प्रतिमा दुनिया को सरदार पटेल के सशक्त व्यक्तित्व के साथ भारत की एकता का संदेश देगी।

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शासन के दसवें वर्ष में प्रवेश की पूर्व संध्या पर बुधवार को अहमदाबाद में एक संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर **जनभागीदारी से स्टेच्यू ऑफ यूनिटी स्मारक बनाने की घोषणा की।** मोदी ने बताया कि इस प्रतिमा का निर्माण सरदार सरोवर बांध से तीन कि.मी. दूर गरुड़ेश्वर साधू बेट पर किया जाएगा, जिसके चारों ओर दस से बारह कि.मी. इलाके में पानी भरा होगा। स्मारक तक नाव के जरिए पहुँचा जा सकेगा। मोदी इससे पहले गांधीनगर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की याद में महात्मा मंदिर का निर्माण शुरू करा चुके हैं। मोदी ने कहा, 'समाज में इतिहास और महापुरुषों का जीवन सदैव प्रेरणास्पद रहा है। सरदार पटेल ने भारत का एकीकरण कर राष्ट्रीय एकता का भगीरथ कार्य किया। दुनिया में सबसे ऊँची बनने वाली उनकी प्रतिमा भारत की अखंडता के साथ गुजरात के विकास की भी प्रतीक होगी।' यह प्रतिमा वर्तमान में दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा चीन के हेनान में बने 153 मीटर ऊँचे स्प्रिंग टेंपल बुद्ध से भी करीब तीस मीटर ऊँची होगी। दिनांक 31 अक्टूबर 1875 को खेड़ा जिले के नडियाद कस्बे में जन्मे **सरदार वल्लभभाई पटेल ने आज़ादी के बाद देश की ५६५ से अधिक रियासतों का एकीकरण कर अंग्रेज़ों की भारत को कई टुकड़ों में बाँटने की साजिश नाकाम कर दी थी।**

'दैनिक जागरण' दिल्ली, ७.१०.२०१० से साभार

वेद वाणी

अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम्
तुञ्जाते वृण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वितं त्तं अस्य रोदसी।
ऋग्वेद १-१०५-२

हर व्यक्ति को वह वस्तु अवश्य मिलती है जिसे वह वास्तव में पाना चाहता है और जिसके लिए वह पूर्ण निष्ठा तथा धैर्य से पाने को जुटा रहता है।

श्री सुरेन्द्र पटेल; सांसद् (राज्यसभा) की पुस्तक 'वेदाज़' से साभार

श्रीराम कथा में सुन्दर काण्ड का नाम सुन्दर काण्ड क्यों?

-रघुनन्दन प्रसाद शर्मा

समय-समय पर अनेक व्यक्तियों के द्वारा विभिन्न विद्वानों के समक्ष यह प्रश्न रखा जाता है कि श्रीराम कथा के 'सुन्दर काण्ड की कथा में ऐसा क्या है कि इसका नामकरण 'सुन्दरकाण्ड' के रूप में किया गया है। देखने में यह प्रश्न जितना सरल और साधारण-सा लगता है, इसका उत्तर उतना सरल और साधारण नहीं है।

श्रीराम कथा में काण्डों का विभाजन और उनका नामकरण दो विशेष आधारों पर किया गया है-एक तो श्रीराम की आयु के काल दूसरा अवस्था विशेष में संपन्न होने वाले स्थानों के नाम पर। पहले आधार के संदर्भ में 'बालकाण्ड' और उत्तरकाण्ड की कथाओं को रखा जा सकता है और दूसरे आधार के संदर्भ में 'अयोध्या', 'अरण्य', 'किष्किंधा' और 'लंका' काण्डों की कथाओं को रखा जा सकता है।

'बालकाण्ड' में श्रीराम की बाल्य और कौमार्यावस्था में घटित घटनाओं, यथा-उनके जन्म, उनकी बाल-सुलभ लीलाओं, उनकी शिक्षा-दीक्षा तथा विभिन्न यात्राओं और उनकी शक्ति सामर्थ्य के परिचय (ताड़का आदि राक्षसों का वध और शिव धनुर्भंग) के साथ उनके राम से सीताराम बनने अर्थात् विवाह होने से संबंधित घटनाओं का वर्णन किया गया है और 'उत्तरकाण्ड' में श्रीराम के अयोध्या के राज-सिंहासन पर विराजमान हो जाने के बाद के जीवन काल में घटित होने वाली घटनाओं यथा-रामराज्य की स्थापना, सन्तानोत्पत्ति, सीता-वनवास आदि की घटनाओं का उल्लेख किया गया है। 'अयोध्या', 'अरण्य', 'किष्किंधा' और 'लंका' काण्डों में श्रीराम की जीवन-गाथा में इन-इन स्थानों पर घटित विभिन्न घटनाओं के वर्णन किए गए हैं। जबकि 'सुन्दरकाण्ड' के नामकरण में इन तीनों ही आधारों का कोई योगदान नहीं है। इस काण्ड की कथा में न तो श्रीराम की किसी अवस्था विशेष की घटनाओं के उल्लेख किए गए हैं और न ही किसी स्थान विशेष की घटनाएं दी गई हैं।

इस काण्ड में नामकरण के संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि **इस काण्ड को 'सुन्दरकाड' के अतिरिक्त 'हृदय काण्ड' और 'मध्य काण्ड' के नामों से भी अभिहित किया जाता है।** एक ही काण्ड की कथा के लिए तीन-तीन नामों का उल्लेख होने से यह जानना और भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है कि आखिर इस काण्ड की कथा में ऐसी विशेषता है क्या?

इस कांड की कथा को 'सुन्दरकाड' का नाम दिए जाने के संदर्भ में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें एक अस्वाभाविक और असम्भव बात को स्वाभाविक और सम्भव बात बनाकर उसे सुन्दरतम रूप में प्रस्तुत किया गया है।इस काण्ड की कथा के शब्द-शब्द में सीताजी और श्रीराम के पृथक्-पृथक् हो जाने पर दोनों के वियोग का करुण-क्रन्दन व्याप्त है, जो कि स्वयं में एक अस्वाभाविक और असंभव बात है। कारण सीताजी और श्रीराम दोनों तो पृथक् हो ही नहीं सकते। दोनों तो हैं ही एक। इनमें कोई पार्थक्य है ही नहीं। एक के बिना दूसरे की कल्पना ही व्यर्थ है। दोनों में विलगता संभव ही नहीं है क्योंकि **सीताजी श्रीराम की छाया हैं, श्रीराम रूपी सूर्य की प्रभा हैं और श्रीराम रूपी चन्द्र की चाँदनी हैं।** तात्पर्य है कि अंतरंग दृष्टि से दोनों का वियोग किसी भी स्थिति में संभव नहीं है।

रावण द्वारा हरण किए जाने से पूर्व ही सीताजी को अपनी छाया को पंचवटी में रखने को श्रीराम कह देते हैं इसीलिए तो लंका में सीताजी की छाया रहने का ही उल्लेख आया है। **वास्तविक सीता जी तो श्रीराम के हृदय में वास करती रही हैं। वस्तुतः अमृत से जैसे उसकी मधुरिमा, गंगाजल से जैसे उसकी पवित्रता, चन्द्रमा से जैसे उसकी शीतलता का पार्थक्य असम्भव है वैसे ही राघवेन्द्र श्रीराम से उनकी सीताजी का पार्थक्य असम्भव है।** इस कथा में बहिरंग दृष्टि से उन दोनों के असम्भव वियोग। पार्थक्य को संभाव्यता बनाकर सीताजी और श्रीराम की वियोग-कथा को सत्यता, सम्भवता और स्वाभाविकता का जामा पहनाकर सुन्दरतम रूप प्रदान किया गया है।

इस काण्ड में सीता-राम के पावन चरित्र की सुन्दरता की कथा तो सर्वत्र विद्यमान है ही, उसको निःस्वार्थ सेवा परायण और अनन्य स्वामी भक्त हनुमानजी द्वारा सीतान्वेषण जैसे असम्भव कार्य को सफलतापूर्वक सम्भव कर दिए जाने की अद्‌भुत क्षमता की कथा और भक्तराज विभीषण की अपने जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि -प्रभु की प्राप्ति-को पाने के लिए अपने सर्वस्व को त्याग देने वाले अद्वितीय और उन्नत चरित्र की सुन्दर कथा, और भी अधिक सुन्दर बना देने में पूरा योगदान कर रही है। वास्तव में इन दोनों कथाओं की सुन्दरता ने सीता-राम की कथा की सुन्दरता को चार-चाँद लगा दिए हैं। सुन्दरता की इस त्रिवेणी के कारण ही इस काण्ड की कथा को 'सुन्दरकाण्ड' का नाम दिया गया है।

'सुन्दरकाण्ड' को श्रीराम कथा का हृदय काण्ड कहे जाने की दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि इसकी कथा कोमलचित्त प्रभु दीनदयाल श्रीराम की प्राणेश्वरी और हृदयेश्वरी सीताजी के पावन, पूज्य और सुन्दर चरित्र की सुषमा से सुरभित हो रही है। यही नहीं, इसकी **कथा में सीताजी के गुणों की प्रशंसा, चरित्र की महिमा और कर्तृत्व की गरिमा के आलोक की सर्वत्र व्याप्ति के साथ-साथ श्रीराम के विविध गुणों की प्रभा का निर्मल प्रकाश भी पूरी तरह से चारों ओर फैला हुआ है।** वास्तव में इस काण्ड के कथानक में दोनों के स्वरूप की सुन्दरता को एक नया आयाम प्रदान किया गया है। सुन्दरता की दृष्टि से 'कोटि मनोज लजावन हारे' श्री राम के सुन्दर शरीर में स्थित सुन्दर हृदय से अधिक सुन्दर संसार में न कुछ रहा है और न है और न होगा। उस सुन्दर हृदय की हृदयेश्वरी का हृदय तो निश्चित ही और भी सुन्दर होगा। सीताजी की इसी सुन्दरता की चर्चा करते हुए 'रामचरितमानस' में तुलसी उन्हें सुन्दरता को और भी सुन्दर बना देने वाली के रूप में चित्रित करते हुए कहते हैं-

'सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई। छविगृह दीपशिखा जनु बरई

(1.22.9.4)

अर्थात् सीताजी श्रीराम के हृदय रूपी भवन को अपनी सुन्दरता के प्रकाश से और भी सुन्दर बनाते हुए ठीक उसी प्रकार से जगमगा देती हैं जैसे सुन्दर छविगृह को दीपशिखा का प्रकाश। उस सुन्दरतम हृदय की गाथा का सुन्दर होना स्वाभाविक ही है। वैसे तो सीताजी को सभी जगह

श्रीराम कथा में सुन्दर काण्ड का नाम सुन्दर काण्ड क्यों?..

जननी के रूप में वन्दनीय और श्लाघनीय दिखाया गया है किन्तु इस काण्ड की कथा में तो प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त और सीताजी के 'अजर-अमर गुणनिधि सुत' हनुमानजी के द्वारा माता के निर्मल, निश्छल और निष्कलंक चरित्र को संसार के सम्मुख परम उज्ज्वल रूप में जिस तरह से उजागर कराया गया है, वह अद्वितीय है। दूसरे शब्दों में इस काण्ड की कथा में अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान् श्री विष्णु श्रीराम की हृदयश्वेरी सीताजी के जन-जन के हृदयों को आह्लादित करने वाले हृदयस्पर्शी चरित्र का वर्णन हनुमानजी के पवित्र हृदय की ज्ञान-भक्ति प्रेम की त्रिवेणी से कल-कल झरने वाले पुनीत शब्दों के माध्यम से सुन्दरतम रूप में अभिव्यक्त किए जाने से इसे हृदयकाण्ड के नाम से अभिहित किया गया है, जो हर दृष्टि से उचित प्रतीत होता है।

इस काण्ड की कथा को 'मध्यकाण्ड' का नाम दिए जाने के संदर्भ में कहा जा सकता है कि इसकी कथा का वर्णन आते-आते श्रीरामकथा अपनी मध्य स्थिति में आ जाती है क्योंकि 'बालकाण्ड' से लेकर 'किष्किंधा काण्ड' तक तो श्रीराम के बाल्य, कौमार्य और युवावस्था के प्रारंभिक जीवन में घटित विभिन्न घटनाओं के वर्णन तो आ ही चुके होते हैं और 'उत्तरकाण्ड' में श्रीराम के उत्तर जीवन की घटनाओं का वर्णन दिया गया है। इस काण्ड में श्रीराम के जीवन की इन दोनों अवस्थाओं के मध्यकाल में घटित विभिन्न घटनाओं का उल्लेख होने से यहाँ श्रीराम कथा अपने मनोहर और सुन्दर 'मध्याह्न' काल को प्राप्त कर लेती है। श्रीराम कथा को प्रारंभ, विकास, मध्याह्न और समापन की स्थिति से देखा जाए तो इस कथा का यह नामकरण भी उचित प्रतीत होता है।

कुल मिलाकर संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'सुन्दर काण्ड' में वर्णित सीता-राम के बहिरंग रूप की सुन्दर कथा के साथ हनुमानजी की सीतान्वेषण में लगाई गई युक्ति-युक्त बुद्धि और अनूठी शक्ति, सच्चे अन्वेषक की दूरदृष्टि, दौत्यकार्य की उच्च कोटि की कार्यक्षमता (लंका के विध्वंस के माध्यम से रावण की आधी से अधिक आर्थिक, सामरिक और सामाजिक शक्ति का ह्रास कर देना) तथा राजदरबार में संपन्न संवाद की समुचित तार्किकता के साथ भक्तराज विभीषण की समस्त ध न-सम्पत्ति सहित अपनी पत्नी, पुत्र ही नहीं सगे भाई तक को त्याग देने अर्थात् संपूर्ण समर्पण की भावना की सुन्दर कथाओं की सुन्दरता ही इस काण्ड के नामकरण का आधार रही हैं।

ए.सी.-10, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली

मर्यादा की सीमा ही कीर्तिदायक

हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति में मर्यादा का बड़ा ही अहम् स्थान है। भगवान राम तो साक्षात् मर्यादा पुरुषोत्तम ही माने गए हैं। यहां के प्राचीन शासक मर्यादा का हमेशा ध्यान रखते थे, लेकिन आजकल की राजनीति मर्यादाहीन हो गई है। एक-दूसरे पर आरोप लगाकर अपने को मीडिया में बनाए रखना नेतृत्वकर्ताओं के बीच आम चलन हो गया है। एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने की बातें दिन-प्रतिदिन समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। इससे मुझे एक पुरानी कहानी याद आ गई।

एक बहुत बड़े तबला वादक थे। उन्हें जब भी एकांत मिलता, वे तबलावादन करने लगते। एकांत की तलाश में वे कई बार जंगल में चले जाते थे।

एक बार वे जंगल में तबला बजा रहे थे। तभी वहां एक बकरी का बच्चा आया और तबले की थाप पर उछलकूद कर नाचने लगा। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। तबला वादक जिज्ञासावश अगले दिन फिर जंगल पहुँचे और तबला बजाना शुरू किया कि बकरी का बच्चा फिर आकर नाचने लगा। रोज-रोज ऐसा होने लगा।

एक दिन तबला वादक ने उत्सुकता से उस नन्हें मेमने से पूछा, 'लगता है तुम पिछले जन्म में संगीत के बहुत बड़े मर्मज्ञ रहे हो या अवश्य ही कोई संगीतकार, जो तुम्हें शास्त्रीय संगीत की इतनी गहरी समझ है। मेरी राग-रागनियां इतनी पेचीदा हैं फिर भी तुम उन पर नृत्य करने लगते हो। आखिर क्या राज है?

बकरी के बच्चे ने उदास स्वर में बड़ी मासूमियत से कहा, 'श्रीमान्! आपके तबले पर मेरी मां का चमड़ा मढ़ा हुआ है। आप जब भी तबला बजाते हैं, तो उसमें से निकली ध्वनियों से ऐसा लगता है मेरी मां प्यार और दुलार भरी आवाज़ में मुझे पुकार रही है और इसलिए मैं खुशी से झूमने लगता हूँ।'

बकरी के बच्चे का उछलना कूदना ठीक था, लेकिन वह यह भूल रहा था कि मरने के बाद भी उसकी मां की खाल पीटी जा रही है, अपमानित की जा रही है। ठीक इसी प्रकार हमारे नेतृत्वकर्ता भूल जाते हैं कि एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाकर भले ही वे चुनाव जीत जाएं, लेकिन क्या इस कीचड़ उछालने की परंपरा से भारत मां आहत नहीं होती!

-दीनानाथ मल्होत्रा

'साहित्य संगम' हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि.

18-19 जी.टी.रोड, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110 095 से साभार

लघु कहानी 'चिंता'

चींटी के बच्चे ने देखा-उसकी माँ अपने वजन से भी भारी अनाज का दाना उठाए हुए लड़खड़ाते हुए चली आ रही है। पूछा-'तुम रोज़-रोज़ अपने वजन से भी अधिक भारी अनाज के दाने उठा लाती हो, किसी दिन किसी भारी दाने के नीचे दब कर मर गई तो मेरा क्या होगा?

'मेरे लाल' चींटी ने पुचकारते हुए बताया-'यदि किसी दिन तुम भूख से मर गए तो मैं सह पाऊँगी, किसी भी माँ को अपनी जान की चिंता नहीं होती बेटे, उसे तो अपने बच्चों की चिंता रहती है बेटे, यह कह बच्चे की ओर ममताभरी नज़रों से देखने लगी।

चेतन आर्य

बसन्ती निवास, सुभाष आर्य, महासमुन्द (म.प्र.)

हॉलैंड में रामचरितमानस का डच भाषा में प्रकाशन शीघ्र

भारतीय मूल के हॉलैंड निवासी अध्यापक व प्रसिद्ध नाट्यकर्मी श्री रामदेव कृष्ण ने तुलसीदास की श्रीरामचरितमानस का डच भाषा में अनुवाद किया है। यह गद्य रूप में है। इसका लोकार्पण 14 जनवरी 2011 को सूरीनाम में पहली बार आयोजित होने वाले कुंभ मेले के दौरान वहाँ के राष्ट्रपति श्री देसी बोतरस द्वारा किया जाएगा।

श्री रामदेव रविवार को अपने त्रि-दिवसीय दौरे पर भारत आए थे। इस दौरान सांस्कृतिक गौरव संस्थान की ओर से उनका विशेष अभिनंदन संकटमोचन आश्रम परिसर में सोमवार 13 दिसम्बर 2010 को आयोजित एक सादे समारोह में किया गया। डच भाषा में अनुदित ग्रंथ की पाण्डुलिपि की सी.डी. बजरंगबली के चरणों में अर्पित कर विश्व हिन्दू परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल जी को सौंपी गई।

कार्यक्रम में श्री रामदेव ने कहा, "मैं अपने जीवन के 18 वर्षों तक हिन्दी और डच भाषा नहीं जानता था। हिन्दी में केवल हाँ और ना की जानकारी थी। डच भाषा को मैं राक्षसी भाषा मानता था। लेकिन यह जानकारी जब वैरागी अखाड़ा के महंत स्वामी ब्रह्मस्वरूपानंद उपाख्य स्वामी ब्रह्मदेव को हुई, तो उन्होंने मुझे कहा कि शर्म करो। तुम हिन्दुस्थान मूल के रहने वाले हो, फिर भी हिन्दी नहीं जानते। स्वामी जी के इस कथन से मैं हिन्दी और डच भाषा सीखने के प्रति उत्सुक हुआ। इसके बाद मैंने डच और हिन्दी भाषा की एक किताब लिखी, ताकि डच लोग भी हिन्दी सीख सकें।"

उन्होंने बताया कि डीडी-1 चैनल पर आने वाले रामानंद सागर द्वारा निर्मित हिन्दी धारावाहिक रामायण को मैंने अपना गुरु माना था। इसके पहले मैंने कभी रामायण नहीं पढ़ी थी। लेकिन धारावाहिक देखने के बाद मैं रामायण पढ़ने के लिए उत्सुक हुआ। जितनी बार पढ़ता, उतनी बार कुछ न कुछ नई जानकारियां मुझे मिलीं। श्रीरामचरितमानस का डच भाषा में अनुवाद करने की प्रेरणा मुझे स्वामी ब्रह्मस्वरूपानंद जी से मिली। उन्होंने ही मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित किया और समय-समय पर आवश्यक सुझाव दिए, जिसके कारण आज यह संभव हो पाया है।

श्री रामदेव ने बताया-"अनुवाद करने में कुल 20 महीने का समय लगा। मैं प्रतिदिन 18 घंटे कार्य करता था और शेष 6 घंटे सोने और नियमित दिनचर्या में लगाता था। इस दौरान मेरी पत्नी श्रीमती नसीम कृष्ण का विशेष सहयोग मिला। बिना उनके सहयोग के यह कार्य संभव नहीं था। वे कॉफी बना-बनाकर मुझे देती रहती थीं और मैं केन्द्रित होकर अनुवाद के कार्य में लगा रहता था। अनुवाद के साथ ही लेआउट, तुलसीदास जी की पेंटिंग्स, बजरंगबली की पेंटिंग्स बनाईं। इसका प्रकाशन हो जाने के बाद मैं तुलसीदास कृत 'वैराग्य संदीपनी' का डच भाषा में अनुवाद करूंगा।"

भविष्य की योजनाओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा -"मैं भगवान श्रीराम के जीवन से जुड़ी 'फ्राम हे राम टू श्रीराम' नामक एक नाटक पर कार्य करूंगा। यह तीन भागों में होगा, जिसमें इतिहास रामचरितमानस और महात्मा गांधी के माध्यम से मैं श्रीराम के महत्व को प्रदर्शित करना चाहता हूँ। इसके माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूँ कि जब 150 से 170 वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज गिरमिटिया मजदूर के रूप में सूरीनाम, हॉलैण्ड आदि देशों में आए तो क्या कारण था कि श्रीरामचरितमानस को भी साथ लाए। महात्मा गांधी ने क्यों मरते वक्त 'हे राम' का उच्चारण किया था, आदि। इन सब बातों का विस्तृत ढंग से वर्णन करूंगा, ताकि लोग राम के महत्व को आसानी से समझ सकें।" श्री रामदेव ने बताया कि इसके पहले मैंने रामलीला का आयोजन किया था, जिसमें सभी पात्र हिन्दी में बोलते थे।।

कार्यक्रम में श्री अशोक सिंहल जी ने कहा कि रामचरितमानस के माध्यम से भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रचार-प्रसार के लिए श्री रामदेव जी का कार्य सराहनीय है।

कार्यक्रम का संचालन सांस्कृतिक गौरव संस्थान के महामंत्री डॉ. महेश चन्द्र ने किया।

रोज़गारोन्मुख पाठ्यक्रम अब हिन्दी में

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा अब हिन्दी माध्यम से रोज़गारोन्मुख पाठ्यक्रम शुरू करने जा रही है। भारत सरकार के दूरस्थ शिक्षा परिषद ने समिति के आधारभूत ढाँचे का निरीक्षण करने के बाद रोज़गारोन्मुख 23 विषयों की सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं पोस्ट ग्रैज्युएट डिप्लोमा कोर्स के लिए हिन्दी में अध्यापन एवं परीक्षा लेने की मान्यता दी है।

हमारे देश में भारत सरकार द्वारा उठाया गया यह एक स्वागत-योग्य कदम है। इसका लाभ प्रारंभ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की प्रान्तीय समितियां उठा सकती हैं। बाद में सभी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के लिए इसके द्वार खोल दिए जाएंगे। यह पढ़ाई दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से होगी। इसे इण्टरनेट से 'ऑन लाइन' किया जाएगा। तैयारी हो जाने के बाद पूरा विवरण हिन्दी संस्थाओं को मुहैया कराया जाएगा।

यह ध्यान रहे कि वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ने बी.ए. तथा एम.बी.ए. डिग्री पाठ्यक्रम की शुरुआत हिन्दी में कर दी है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं पोस्ट ग्रेज्युएट डिप्लोमा पाठ्यक्रम की शुरुआत करके उन विद्यार्थियों के लिए लाभ मुहैया कराने का प्रयास करेगी जिन्होंने केवल मैट्रिक या बारहवीं तक की पढ़ाई की है और जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। इसके साथ ही जिन्होंने कोविद, राष्ट्रभाषा रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की है उन्हें प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मुख्य कर्मभूमि वर्धा से हिन्दी माध्यम से रोज़गारपरक शिक्षा के क्षेत्र में उठाए गए कदम से पूरा देश लाभान्वित होगा, हम ऐसी आशा करते हैं।

अनन्तराम त्रिपाठी
प्रधान संपादक,'राष्ट्रभाषा'
अक्टूबर 2010, (हिन्दी नगर, वर्धा, महाराष्ट्र) पत्रिका से साभार

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक जलद घिरे आकाश
दोहाकार सुबोध कुमार सुधाकर
प्रकाशक प्रभा प्रकाशन, त्रिवेणी गंज, सुपौल (बिहार)-८५२ १३९
मूल्य ६० रुपये, पृष्ठ ४७

बिहार स्थित सुपौल के विशिष्ट कवि सुबोध कुमार जी के दोहा संग्रह 'जलद घिरे आकाश' में अध्यात्म, धर्म, सामाजिक बुराइयों, राजनीतिक गंदगियों के संबंध में अनेक दोहों के साथ-साथ रिमझिम बारिश की फुहारों, होली के रंगों, हास्य की फुलझड़ियों सहित व्यंग्य के छींटों वाले दोहे भी सम्मिलित हैं।

राजनीति के दूषित होने के संबंध में निम्नलिखित दोहा व्यंग्यपूर्ण है

नेता जी बनते बहुत, गुंडों के सरताज।
बैठे रिश्वत खात हैं, कई कबूतरबाज॥

भक्तिरस के अनेक दोहों में से निम्नलिखित दोहा अत्यंत मार्मिक है

सांसों में साँई बसे, उच्चारो ऊँकार।
काशी करवट ना करो, अहं करो संहार॥

सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने वाले दोहों में बाढ़ से संबंधित निम्नलिखित दोहा बाढ़ के दृश्य को सजीव बना रहा है :-

जगह जगह लाशें पटीं, पानी में उपलाय।
ऐसा मंजर आँख से, ना देखा हो भाय॥

इस दोहा संग्रह में काव्य के अन्य रसों का आस्वादन सुलभ है।

सुधाकर जी के गीतों के अनेक संग्रह हैं 'बीन के तार, गीत प्रेम के, चल नदिया के पार आदि।

विश्वास है कि पाठक इस संग्रह को अपने पुस्तक संग्रह में शामिल करना चाहेंगे।

समीक्षक-डॉ. रामशरण गौड़

पुस्तक श्री सत्यनारायण कथा (दोहा-चौपाई छंद में)
लेखक - श्री प्यारे लाल त्रिवेदी
सी-२/५३ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, नई दिल्ली-११० ०३५
मूल्य २५ रुपये

देश में और विदेशों में भी श्रीसत्यनारायण कथा के आयोजन सामान्यत: पूर्णिमा के दिन होते हैं। संभवत: यह परंपरा लाखों वर्ष पुरानी है। संस्कृत में लिखित श्रीसत्यनारायण कथा के हिन्दी सहित लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं और घरों में जहाँ कहीं कथावाचक जी संस्कृत के ज्ञाता नहीं होते संस्कृत में कथा बांचते हैं तो उसका सारांश श्रोताओं को उनकी भाषा में सुनाते हैं।

यह जो संग्रह प्यारे लाल त्रिवेदी जी ने तैयार किया है, **अत्यंत विलक्षण संग्रह है,** इसमें संपूर्ण सत्यनारायण कथा हिन्दी में दोहा और चौपाई छंदों में कर दी गई है जो सब गेय हैं और भाषा स्वाभाविक, सही अर्थ देने वाली, सरल है। यह रामचरितमानस की शैली में बनी है। कथा संग्रह के साथ-साथ इसमें त्रिवेदी जी ने सत्यनारायण पूजन-विधि, विभिन्न देवी-देवताओं के पूजन की विधियां सम्मिलित करके हवन विधि , आरती आदि इसमें सम्मिलित करके इसे अत्यंत उपयोगी बना दिया है।

प्यारे लाल त्रिवेदी जी 'गौरव घोष' के संपादक मण्डल की ओर से हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं। हम पाठकों से यह अपेक्षा करेंगे कि वे इस अत्यंत आकर्षक संग्रह को अवश्य खरीद कर पढ़ेंगे और पारायण करेंगे।

पाठकगण मुलतान यानि मूल स्थान (पाकिस्तान) जहाँ मानव सृष्टि का प्रथम मानव आया तथा जहाँ भक्त प्रहलाद की भक्ति की रक्षा हेतु भगवान् नृसिंह अवतार हुआ, वहाँ की बोली ***सिरायकी***में **डॉ. जगदीश बत्रा** द्वारा रचित कविताओं का आनंद लें। मुलतान की बोली पाकिस्तान में 5 करोड़ लोगों की बोली है।

स्वतंत्रता दिवस

प्यार दे रंग विच मैं सब कूं रंगेसा
झण्डा त्रंगा मैं सब जा लहरेसा
सारे सिरायकी कू कठा करेसां
जेड़ा रुस के बाहसी मैं हूं कूं मनेसा
तां आज़ादी मनेसां ते खुशियां वण्डेसां
हिन्दुस्तान विच्च हन चीज़ा चार
अहिंसा, प्रेम, शांति ते सदाचार
भारत विच्च वी मिलदिन चीज़ चार
भुखमरी, गरीबी, आतंक ते भ्रष्टाचार
गुज़रे डींह तू याद न कर
जिदंड़ी कू बरबाद न कर
मुनसिफ थी गिन पथर दिल
इनसाफ दी तूं फरियाद न कर
सिरायकी सब हिन मतलब दे
हञ्जु अपणियां बरबाद न कर
मैडा घर न मंदिर मसजिद
न गिरजा, गुरुद्वारा
मैकू तुसा कैद न करो
मैं हाँ ए जग सारा
जे तुसां मन मरज़ी करो सड़ो मैकू अल्हा
राम शाम ईसा वी आखो मैं कल्हे दा कल्हा
मैं सब विच हां सब मैडे विच्च हिन
ही दुनिया विच्च जीवण वाले साडे मैड जिद हिन
सुणु सिरायकी सारे लोकों राज़ डसेदां खुलके

डॉ. जगदीश बत्रा; अधिवक्ता
जी-109, साकेत, नई दिल्ली, मोबाइल-9811078919

Republic Of Scams : A Choronology

Total Scam Money (approx) Since 1992 : Rs. 73000000000000 Cr. (73 Lakh Crore)

1992 -Harshad Mehta securities scam Rs 5,000 cr
1994 -Sugar import scam Rs 650 cr
1995 -Preferential allotment scam Rs 5,000 cr
Yugoslav Dinar scam Rs 400 cr
Meghalaya Forest scam Rs 300 cr
1996-Fertiliser import scam Rs 1,300 cr
Urea scam Rs 133 cr
Bihar fodder scam Rs 950 cr
1997 -Sukh Ram telecom scam Rs 1,500 cr
SNC Lavalin power project scam Rs 374 cr
Bihar land scandal Rs 400 cr
C.R. Bhansali stock scam Rs 1,200 cr
1998 -Teak plantation swindle Rs 8,000 cr
2001 -UTI scam Rs 4,800 cr
Dinesh Dalmia stock scam Rs 595 cr
Ketan Parekh securities scam Rs 1,250 cr
2002 -Sanjay Agarwal Home Trade scam Rs 600 cr
2003 -Telgi stamp paper scam Rs 172 cr
2005 -IPO-Demat scam Rs 146 cr
Bihar flood relief scam Rs 17 cr
Scorpene submarine scam Rs 18,978 cr
2006 -Punjab's City Centre project scam Rs 1,500 cr,
Taj Corridor scam Rs 175 cr
2008 -Pune billionaire Hassan Ali Khan tax default Rs 50,000 cr
The Satyam scam Rs 10,000 cr
Army ration pilferage scam Rs 5,000 cr
The 2-G spectrum swindle Rs 60,000 cr
State Bank of Saurashtra scam Rs 95 cr
Illegal monies in Swiss banks, as estimated in 2008 Rs 71,00,000 cr
2009 -The Jharkhand medical equipment scam Rs130 cr
Rice export scam Rs 2,500 cr
Orissa mine scam Rs 7,000 cr
Madhu Koda mining scam Rs 4,000 cr"
SC refuses to quash PIL against Mayawati in Taj corridor scam
Orissa mine scam could be worth more than Rs14k cr
CORRUPTION, MONEY LAUNDERING SCAM,
Koda discharged from hospital, arrest imminent
'A Cover-Up Operation':
"It's a scam involving close to Rs 60,000 crores"
Spectrum scam: How govt lost Rs 60,000 crore
India's biggest scams 1, Ramalinga Raju, Rs. 50.4billion
India's biggest scams 2, Harshad Mehta, Rs. 40 billion
India's biggest scams 3, Ketan Parekh, Rs. 10 billion
India's biggest scams 4, C R Bhansali, Rs. 12 billion
India's biggest scams 5, Cobbler scam
India's biggest scams 6, IPO Scam
India's biggest scams 7, Dinesh Dalmia, Rs. 5.95 billion
India's biggest scams 8, Abdul Karim Telgi, Rs. 1.71billion
India's biggest scams 9, Virendra Rastogi, Rs. 430 million
India's biggest scams 10, The UTI Scam, Rs. 320 million
India's biggest scams 11, Uday Goyal, Rs. 2.1 billion
India's biggest scams 12, Sanjay Agarwal, Rs. 6 billion
India's biggest scams 13, Dinesh Singhania, Rs. 1.2 billion

1, Jeep Purchase (1948)-Free India's corruption graph begins. V. K. Krishna Menon, then the Indian high commissioner to Britain, bypassed protocol to sign a deal worth Rs 80 lakh with a foreign firm for the purchase of army jeeps. The case was closed in 1955 and soon after Menon joined the Nehru cabinet.

2, Cycle Imports (1951)-S.A. Venkataraman, then the secretary, ministry of commerce and industry, was jailed for accepting a bribe in lieu of granting a cycle import quota to a company.

3, BHU Funds (1956)-In one of the first instances of corruption in educational institutions, Benaras Hindu University officials were accused of misappropriation of funds worth Rs 50 lakh.

4, MUNDHRA SCANDAL (1957)-It was the media that first hinted there might be a scam involving the sale of shares to LIC, Feroz Gandhi sources the confidential correspondence between the then Finance Minister T.T. Krishnamachari and his principal finance secretary, and raised a question in Parliament on the sale of 'fraudulent' shares to LIC by a Calcutta-based Marwari businessman named Haridas Mundhra. The then Prime Minister, Jawaharlal Nehru, set up a one-man commission headed by Justice M.C.Chagla to investigate the matter when it becomes evident that there was a prima facie case. Chagla concluded that Mundhra had sold fictitious shares to LIC, thereby defrauding the insurance behemoth to the tune of Rs. 1.25 crore. Mundhra was sentenced to 22 years in prison. The scam also forced the resignation of T.T.Krishnamachari.

6, Teja Loans (1960)-Shipping magnate Jayant Dharma Teja took loans worth Rs 22 crore to establish the Jayanti Shipping Company. In 1960, the authorities discovered that he was actually siphoning off money to his own account, after which Teja fled the country.

7, Kairon Scam (1963)- Pratap Singh Kairon became the first Indian chief minister to be accused of abusing his power for his own benefit and that of his sons and relatives. He quit a year later.

8, Patnaik's Own Goal (1965)- Orissa Chief Minister Biju Patnaik was forced to resign after it was discovered that he had favoured his privately-held company Kalinga Tubes in awarding a government contract.

9, Maruti Scandal (1974)-Well before the company was set up, former Prime Minister Indira Gandhi's name came up in the first Maruti scandal, where her son Sanjay Gandhi was

favoured with a license to make passenger cars.

10, Solanki Exposé (1992)- At the World Economic Forum, Madhavsinh Solanki, then the external affairs minister, slipped a letter to his Swiss counterpart asking their government to stop the probe into the Bofors kickbacks. Solanki resigned when India Today broke the story.

11, Kuo Oil Deal (1976)-The Indian Oil Corporation signed an Rs 2.2-crore oil contract with a non-existent firm in Hong Kong and a kickback was given. The petroleum and chemicals minister was directed to make the purchase.

12, Antulay Trust (1981)-With the exposure of this scandal concerning A.R. Antulay, then the chief minister of Maharashtra, The Indian Express was reborn. Antulay had garnered Rs 30 crore from businesses dependent on state resources like cement and kept the money in a private trust.

13, HDW Commissions (1987)-HDW, the German submarine maker, was blacklisted after allegations that commissions worth Rs 20 crore had been paid. In 2005, the case was finally closed, in HDW's favour.

14, Bofors Pay-Off (1987)-A Swedish firm was accused of paying Rs 64 crore to Indian bigwigs, including Rajiv Gandhi, then the prime minister, to secure the purchase of the Bofors gun.

15, St Kitts Forgery (1989)- An attempt was made to sully V.P. Singh's Mr Clean image by forging documents to allege that he was a beneficiary of his son Ajeya Singh's account in the First Trust Corp. at St Kitts, with a deposit of $21 million.

16, Airbus Scandal (1990)- Indian Airlines's (IA) signing of the Rs 2,000-crore deal with Airbus instead of Boeing caused a furore following the crash of an A-320. New planes were grounded, causing IA a weekly loss of Rs 2.5 crore.

17, Securities Scam (1992)-Harshad Mehta manipulated banks to siphon off money and invested the funds in the stock market, leading to a crash. The loss: Rs 5,000 crore.

18, Indian Bank Rip-off (1992)-Aided by M. Gopalakrishnan, then the chairman of the Indian Bank, borrowers-mostly small corporates and exporters from the south-were lent a total of over Rs 1,300 crore, which they never paid back.

19, Sugar Import (1994)- As food minister, Kalpnath Rai presided over the import of sugar at a price higher than that of the market, causing a loss of Rs 650 crore to the exchequer. He resigned following the allegations.

20, MS SHOES SCAM (1994)-Anyone who war old enough in 1994 to read will remember the advertisements- tens of them intriguingly headlined: 'Who is Pawan Sachdeva?' For the record, it was the peak of the public issued-led advertising boom and the ads were created by the Delhi branch of Rediffusion. Sachdeva, the promoter of MS Shoes, allegedly used company funds to buy shares (of his own company) and rig prices, prior to a public issue. He is alleged to have colluded with officials in the Securities Exchange Board of India (SEBI) and SBI Caps, which lead-managed the issue, to dupe the public into investing in his Rs. 699-crore public-***-rights issue. Sachdeva was later acquitted

21, JMM Bribes (1995)-Jharkhand Mukti Morcha leader Shailendra Mahato testified that he and three party members received bribes of Rs 30 lakh to bail out the P.V. Narasimha Rao government in the 1993 no-confidence motion.

22, In a Pickle (1996)-Pickle baron Lakhubhai Pathak raised a stink when he accused former Prime Minister P.V. Narasimha Rao and godman Chandraswami of accepting a bribe of Rs 10 lakh from him for securing a paper pulp contract.

23, Telecom Scam (1996)-Former minister of state for communication Sukh Ram was accused of causing a loss of Rs 1.6 crore to the exchequer by favouring a Hyderabad- based private firm in the purchase of telecom equipment. He, along with two others, was convicted in 2002.

24, Fodder Scam (1996)-The accountant general's concerns about the withdrawal of excess funds by Bihar's animal husbandry department unveiled a Rs 950-crore scam involving Lalu Prasad Yadav, then the state chief minister. He resigned a year later.

25, Urea Deal (1996)-C.S. Ramakrishnan, MD, National Fertiliser, and a group of businessmen close to the P.V. Narasimha Rao regime fleeced the government and took Rs 133 crore from the import of two lakh tonne of urea, which was never delivered.

26, Hawala Diaries (1996)-The scandal surfaced following CBI raids on hawala operators in Delhi in 1991. But it was S.K. Jain's diaries that had heads rolling.

27, CRB SCAM (1997)-Another scam forged by greed and discovered through accident. Chain Roop Bhansali, a smart-talking entrepreneur, created a pyramid financial empire based on high-cost financing. At its peak, his Rs. 1,000-crore financial conglomerate had in its ranks a mutual fund, a financial services company into fixed deposits, and a merchant bank. That Bhansali knew how to work the system became evident when he also managed to secure a provisional banking license. Then his luck ran out. An executive in the State Bank of India Inadvertently discovered that some interest warrants issued by Bhansali were not backed by cash. The bubble finally burst in May 1997, but by that time investors had lost over Rs. 1,000 crore. This was among the first retail scams in India and it was played out, in smaller avatars, across the country-especially in the South where financial services companies promised returns in excess of 20 per cent and decamped with the principal. Bhansali was arrested for a few weeks and released later on bail.

28, MEHTA'S SECOND COMING (1998)-The Big Bull returned to the bourses. This time, he allegedly colluded with the promoters of BPL, Videocon International, and Sterile Industries to rig the share prices of these companies. The inevitable collapse happened sooner than planned, Harshad Mehta orchestrated a cover-up operation that included a high=jinks effort by officials of Bombay Stock Exchange to (illegally) open the trading system in the middle of the night

to set things right, but the damage had been done. SEBI finally passed its ruling on the scam in 2001, banning the three companies concerned from tapping the market-BPL, for two years. Mehta was debarred for life form dealing in Securities Appellate Tribunal (SAT) in October 2001

29, VANISHING COMPANIES SCAM (1998)-A passing remark heard by then Finance Minister Palaniappan Chidambaram resulted in a furore over what was badly-kept secret on Dalal street. Chidambaram was told that hundreds of companies had disappeared after raising moneys form the public. An informal scrutiny revealed that perhaps over 600 companies were missing. Chidambaram ordered a probe by SEBI. The SEBI probe conducted in May 1998 revealed that while many companies are not traded on the bourses at least 80 companies that had rises Rs.330.78 crore were simply missing. Later that year, the Department of Company Affairs (DCA) was asked to probe and penalize these companies. DCA still investigating. Investigations continue to this day.

30, PLANTATION COMPANIES SCAM (1999)-It was as innovative a swindle as any effected in the world. Savvy entrepreneurs convinced gullible investors that given the right irrigation and fertilizer inputs, teak, strawberries, and anything else that could be grown, would grow anywhere in the country. The promoters could afford to collect money from investors and not worry about retribution (or returns, for that matter). For, plantation companies fell under the purview of neither SEBI nor Reserve Bank of India. Indeed, they didn't even come under the scope of the Department decided to change things in 1999, enough investors had been gulled: 653 companies, between them, had raised Rs. 2,563 crore from investors. To date, not many investors have got their principals back, just another affirmation of the old saying about money not growing on trees.

31, Match Fixing (2000) :- Mohammed Azharuddin, till then India's cricket captain, was accused of match-fixing. He and Ajay Sharma were banned from playing, while Ajay Jadeja and Manoj Prabhakar were suspended for five years.

32, KETAN PAREKH SCAM (2001)-Ketan Parekh's modus operandi wasn't very different from Harshad Mehta's. If Mehta used banker's receipts, then Parekh used pay orders to ramp up the prices of his favourite scrips (the K-10). Apart from money form the banking system Parekh also rerouted money from corporated like HFCL (Rs. 425 crore), and Zee (Rs. 340 crore) to good effect. He was caught when pay-orders issued by Madhavpura Mercantile Cooperative Bank bounced. Although the total amount involved in the scam was just Rs. 137 crore, the impact was far greater.

Apparently, when a bear cartel sensed Parekh was in trouble, it stepped in and leveraged a dip in the NASDAQ to bear down stock prices. The resultant slump in the markets happened soon after Finance Minister Yashwant Sinha presented what he considered his best budget ever. Under pressure from the government, SEBI investigated the scam and heads began to roll. Among them: the entire management team of BSE, including its president Anand Rathi, CSFB, First Global, and, in an indirect connection, P.S.Subramanyam, the Chairman of UTI. Evidently, for the 18 months that PSS was Chairman of UTI, the Trust had mirrored the actions of the bull cartel. The result? When the market tanked, so did the NAV of its holy cow, the US-64.

33, Tehelka Sting (2001)-Tehelka, an online news portal, used spycams to catch army officers and politicians accepting bribes, in their sting operation called Operation Westend. Investigative journalism turned another corner in the country.

34, Stockmarket Scam (2001)-The mayhem that wiped off over Rs 1,15,000 crore in the markets in March 2001 was masterminded by the Pentafour bull Ketan Parekh. He was arrested in December 2002 and banned from acccessing the capital market for 14 years.

35, Home Trade Scam (2002)-Under the pretext of gilt trading, Rs 600 crore was swindled from over 25 cooperative banks in Maharashtra and Gujarat by a Navi Mumbai-based brokerage firm Home Trade. Sanjay Agarwal, CEO of the firm, was arrested in May 2002.

36, Stamp Paper Scam (2003)-The sheer magnitude of the racket was shocking-it caused a loss of Rs 30,000 crore to the exchequer. Disclosures of the mastermind behind it, Abdul Karim Telgi, implicated top police officers and bureaucrats.

37, Oil-for-Food Scandal (2005)-K.Natwar Singh was unceremoniously dropped from the Cabinet when his name surfaced in the Volcker Report on the Iraq oil-for-food scam.

What India Could Do With Rs 73 Lakh Crore?

Build: 2.4 crore primary healthcare centres. That's at least 3 for every village, at a cost of Rs 30 lakh each.

Build: 24.1 lakh Kendriya Vidyalayas at a cost of Rs 3.02 crore each, with two sections from Class VI to XII
Construct: 14.6 crore low-cost houses assuming a cost of Rs 5 lakh a unit.
Set up: 2,703 coal-based power plants of 600 MW each. Each costs Rs 2,700 crore.

Supply: 12 lakh CFL bulbs. That's enough light for each of India's 6 lakh villages

Construct: 14.6 lakh km of two-lane highways. That's a road around India's perimeter 97 times over.

Clean up: 50 major rivers for the next 121 years, at Rs 1,200 crore a river every year.

Launch: 90 NREGA-style schemes, each worth roughly Rs 81,111 crore.

Announce: 121 more loan waiver schemes. All of them worth Rs 60,000 crore.

Give: Rs 56,000 to every Indian. Even better, give Rs 1.82 lakh to 40 crore Indians living BPL.

Grow the GDP: The scam money is 27% more than our GDP of Rs 53 lakh crore."

Flying the Republic's flag

-Arun Jaitley

The Ekta Yatra of the BJP's Youth Wing covered 3500 km and passed through 12 states. It was a peaceful display of nationalism. The Yuva Morcha wanted to assert every Indian's right to fly the national flag on every inch of Indian soil. "Why do it in Kashmir and not in Chhattisgarh?" asked J&K Chief Minister Omar Abdullah. A good question, which he himself should endeavour to answer. The chief minister of no other state had an objection to hoisting of the national flag. It is only he who objected. The environment he created in the Kashmir valley is such that an attempt to hoist the national flag in Srinagar will "provoke" the separatists. It will be seen as an anti-Kashmiri move. He, therefore, launched a war on the Yatra.

The national flag is a symbol of India's honour and pride. Pandit Nehru described it in the Constituent Assembly as "a flag of freedom not for ourselves but a symbol of freedom for all people who may seek it." The member from the Anglo-Indian community, Frank Anthony said that "while this is a symbol of our past, it inspires us for the future. This flag flies as a flag of the nation and it should be the duty of and privilege of every Indian not only to cherish and live under it but if necessary, to die for it."

The Supreme Court, while hearing the case of Naveen Jindal, now a Congress MP, described flying the flag as free speech, intended to highlight nationalism, patriotism and love for the motherland. The use of the national flag to express these sentiments is a fundamental right. When several separatists met at an auditorium in New Delhi three months ago to assault the very idea of India, calling it an unnatural nation-state that is bound to disintegrate, they openly advocated the segregation of its territory from the Indian union. This seditious exercise was described as free speech. The Central government expressed its inability to take any action. However, the Chidambaram-Omar combination, while expressing their inability to take action against seditious speeches, decided to prevent the exercise of nationalistic free speech when it came to carrying the national flag in Jammu & Kashmir.

Many have asked the question as to why anyone should have an objection to the carrying of the national flag. The answer indeed is intriguing as I endeavour to search for it. Along with two of my colleagues, I landed in Jammu on the afternoon of January 24. Some policemen entered our aircraft and handed me an order, ostensibly under Section 144 of the Code of Criminal Procedure, which read as follows: "Whereas it has been reported that Shri Arun Jaitley is also landing in the district and there are inputs that the persons of these profile individuals (sic) is proning (sic) to create law and order problem besides heightening tension in the district. Moreover, the security forces are extremely tied up with the law and order duties and maintaining very high level of vigil and surveillance that any further assignment connecting (sic) with the law and order problem are (sic) providing necessary security as per SOP to the high profile individuals under security cover, may not be possible."

We were, therefore asked to leave the district and the state of Jammu & Kashmir. I had no doubt on the receipt of this order that it was illegal. The intention of the state government was suspect as its grammar. How could the power to issue a prohibitory order be used to extern us from the state? We were there only to address a public meeting in Jammu and return. We were illegally detained at the airport for over six hours. We were not allowed to move out of the airport. After this illegal detention, we were misinformed that we were being taken to prison, and were "abducted." We were put in separate vehicles and driven for the next two-and-a-half hours and dropped outside J&K, at Madhopur in Punjab, at midnight. Fortunately, our political colleagues in Punjab became aware of our presence at the border and arrived in large numbers to put us in their vehicles and find suitable lodging for us.

The next afternoon, we re-entered the state carrying the national flag, along with Anurag Thakur, the president of our youth wing, and were arrested for violation of the same prohibitory orders.

Several important political and constitutional questions arise with regard to the steps taken by the state government. Jammu Division is not a disturbed area. Why is the holding of political rallies prohibited there? Can CrPC's Section 144 be used for externing the two leaders of the parliamentary opposition from the state? Where is the source of power to physically put the two of us, along with our colleagues, in a vehicle, and without a legal order in writing throw us outside the state? Can the power under Section 144 of CrPC to issue prohibitory orders be utilised to arrest people for holding the national flag in Srinagar — even a solitary political worker? Where is the source of power for committing all these illegalities? In Srinagar all those who reached the Lal Chowk and the Dal Gate holding the national flag were arrested and physically assaulted. Some have even suffered fractures. I have personally brought this to the notice of the CM and DGP of the state.

The BJP Yuva Morcha's exercise has energised the BJP cadres. It has exercised public opinion. The political consequences of the debate apart, what was the message that the Chidambaram-Omar duo was trying to convey? They hijacked trains to prevent political workers from reaching the Jammu border. They shabbily treated the leaders of opposition

with the utmost discourtesy, detaining them illegally and deporting them without authority in law. They reduced the republic to a relic: on Republic Day, holding a national flag became a ground for arrest and torture. Why did they do so?

Omar Abdullah wanted to convey a message to the Valley: "I stopped the BJP rally." He wanted to increase his acceptability there even if it created an adverse opinion against him in the rest of the country. The home minister apparently agreed without realising the long-term consequences. He joined Omar in psychologically surrendering to the separatists' psyche. They converted the flying of the national flag into a prohibited activity. The fact that many BJP workers reached Lal Chowk and flew the national flag even at the cost of their personal safety was an assault on the arrogance of the state administration.

The Ekta Yatra is over. But the political debate continues. How do you politically and emotionally integrate the state of J&K with the rest of India? Is it by weakening the political and constitutional relationship, something that started in 1950, or by strengthening it? Most of India knows the answer. I only hope that the Chidambaram-Omar duo abandons living in denial.

The writer is the Leader of the Opposition in the Rajya Sabha

courtsy: The Indian Express, Dt. Jan. 29, 2011

The so called "Hindu Terror"

-Francois Gautier

Is there such a thing as 'Hindu terrorism', as the arrest of Sadhvi Pragya Singh Thakur for the recent Malegaon blasts may tend to prove? Well, I guess I was asked to write this column because I am one of that rare breed of foreign correspondents— a lover of Hindus! A born Frenchman, Catholic-educated and non-Hindu, I do hope I'll be given some credit for my opinions, which are not the product of my parents' ideas, my education or my atavism, but garnered from 25 years of reporting in South Asia (for Le Journal de Geneve and Le Figaro). In the early 1980s, when I started freelancing in south India, doing photo features on kalaripayattu, the Ayyappa festival, or the Ayyanars, I slowly realised that the genius of this country lies in its Hindu ethos, in the true spirituality behind Hinduism. The average Hindu you meet in a million villages possesses this simple, innate spirituality and accepts your diversity, whether you are Christian or Muslim, Jain or Arab, French or Chinese. It is this Hinduness that makes the Indian Christian different from, say, a French Christian, or the Indian Muslim unlike a Saudi Muslim. I also learnt that Hindus not only believed that the divine could manifest itself at different times, under different names, using different scriptures (not to mention the wonderful avatar concept, the perfect answer to 21st century religious strife) but that they had also given refuge to persecuted minorities from across the world—Syrian Christians, Parsis, Jews, Armenians, and today, Tibetans. In 3,500 years of existence, Hindus have never militarily invaded another country, never tried to impose their religion on others by force or induced conversions. You cannot find anybody less fundamentalist than a Hindu in the world and it saddens me when I see the Indian and western press equating terrorist groups like SIMI, which blow up innocent civilians, with ordinary, angry Hindus who burn churches without killing anybody. We know also that most of these communal incidents often involve persons from the same groups—often Dalits and tribals—some of who have converted to Christianity and others not.

However reprehensible the destruction of Babri Masjid, no Muslim was killed in the process; compare this to the 'vengeance' bombings of 1993 in Bombay, which wiped out hundreds of innocents, mostly Hindus. Yet the Babri Masjid destruction is often described by journalists as the more horrible act of the two. We also remember how Sharad Pawar, when he was chief minister of Maharashtra in 1993, lied about a bomb that was supposed to have gone off in a Muslim locality of Bombay.

I have never been politically correct, but have always written what I have discovered while reporting. Let me then be straightforward about this so-called Hindu terror. Hindus, since the first Arab invasions, have been at the receiving end of terrorism, whether it was by Timur, who killed 1,00,000 Hindus in a single day in 1399, or by the Portuguese Inquisition which crucified Brahmins in Goa. Today, Hindus are still being targeted: there were one million Hindus in the Kashmir valley in 1900; only a few hundred remain, the rest having fled in terror. Blasts after blasts have killed hundreds of innocent Hindus all over India in the last four years. Hindus, the overwhelming majority community of this country, are being made fun of, are despised, are deprived of the most basic facilities for one of their most sacred pilgrimages in Amarnath while their government heavily sponsors the Haj. They see their brothers and sisters converted to Christianity through inducements and financial traps, see a harmless 84-year-old swami and a sadhvi brutally murdered. Their gods are blasphemed.

So sometimes, enough is enough.At some point, after years or even centuries of submitting like sheep to slaughter,

The so called "Hindu Terror" ...

Hindus—whom the Mahatma once gently called cowards—erupt in uncontrolled fury. And it hurts badly. It happened in Gujarat. It happened in Jammu, then in Kandhamal, Mangalore, and Malegaon. It may happen again elsewhere. What should be understood is that this is a spontaneous revolution on the ground, by ordinary Hindus, without any planning from the political leadership. Therefore, the BJP, instead of acting embarrassed, should not disown those who choose other means to let their anguished voices be heard.

There are about a billion Hindus, one in every six persons on this planet. They form one of the most successful, law-abiding and integrated communities in the world today. Can you call them terrorists?

courtsy: The Hindu Voice, Vol.9, Issue no. 9, Dec.2010

Review Article

B.P. Singhal : The Call Eternal, The Thrill in Living, Publishers-Selective and Scientific Books, 2010, Post Box No. 429, G.P.O., N. Delhi -110001 Pp. 388, Price Rs. 395/-

This book is at once a treatise and an **'Action Manual'** about living life in its full awareness. It vividly brings out the role and inter-play of the twin powers of **'Vivek'** and **'Ahankar'** which between themselves control the entire gamut of human conduct. To that end, therefore, the **'Composition of a Human Being'** has been analyzed in depth, laying bare the origin and potential of these two powers.

This book addresses a multitude of very fundamental questions about life and has resolved them with disarming logic. In the process it also gives **'concrete'** and **'tangible'** definitions of words like **'character', 'progress', 'success', 'perfection', 'sanskar', 'dharm', 'salvation', 'purpose of life', etc.** to enable greater precision in discourse.

In an era of changing values, this book gives the touchstone on which the value of every **'value'** can be tested to enable the rejection of all false values by upcoming generations. The book describes how **'sanskars'** are formed and why **'nature'** passes on its retribution not on the basis of the deed done, but on the basis of the **'intention'** behind that deed. The book unravels a host of little known Laws of Nature, including the laws that govern the causation of happiness and banishment of misery.

In the concluding four chapters, the book explains the paramountcy of **'goal'** in life and shows how to discover it and then how to make one's self deserving of it.

Using the power of **'logic'** the book most uncannily re-establishes the relevance and power of **'faith'** in human affairs.

Rich tributes have come from celebrated David Frawley, Director American Institute of Vedic studies. New Mexico, Dr. R.K. Tiwari Former Scientific Advisor to Chief of Naval staff and Dr. S.S. Roy Former Professor and Head, Deptt. of Philosophy, Allahabad University.

The book consists of 35 chapters running into 388 pages. It begins with the adumbration of the enigma of life which has been illustrated using an anecdote which help the readers to see through more clearly. The book travels on to a long journey which inevitably brings in the nature of human being with the elements like soul, **Ahankar**, the **jiva** and the body and the interplay of the animate forces. It then plunges into the intricacies of existence, and the thought power with an urge to discover the meaning of the power and paramountcy of the goal in life.

Coming through the book gives you the feeling of floating into the boundless cosmos and you begin to realise 'a kingdom of the Divine' is with in you it is a lucrative invitation to practice it.

The life has been reduced to fire fighting or even worse. But the book reminds that life is a precious gift of almightily which has its goal to be understood by the individual himself with the help of nature. He alone is to chart the course for the realisation of the goal. In the process he can make his life dynamic ands purposeful, connecting threads with the divinity. The law of the opposite is unlimited or in other words the dialects operate extensively in variety of spheres.

The anecdote on page 248 and the authors experience is only a vindication of Gandhian precept which says "you think zero of yourself the people will think high of you - you think high of yourself the people will think zero of you." But should it not emanate from the natural roots for we have seen enough many politicians reducing themselves to a **Banda Nachiz**? The enigma continues.

The reader's mindset will determine which way he takes it after going through the work. He may interpret it as the essence of Hindu social and political thought or even an interesting reading to see the evolution of his 'self' with reference to the work. More likely is that if he has the spark of good in him he will feel inspired with reference to this work. The central to the Indian political philosophy is the concept of **Ahankar** which historically is the prime mover of action

leading to the establishment of world empires of misery and slavery. It has also grown in the time scale from **satyug** to **kaliyug** as its *'casus beli'*.

The relevance of the book can be resurrected from the sacred to the practical if the education set up of our country accepts its principles and frame polices for educating youth of this country. The main issue is to turn the face of ***kaliyug*** from going further adrift.

The book is a manual for right speech right conduct, right thinking - can play a powerful role in shaping the character of the individual. There are glimpses of *Panchtantra* style which is good for parents, teachers and the young learners. The remarkable outcome of the work is its lucidity and simplicity of narration touching the depth of Hindu philosophy.

S.G. S.

2000-yr-old link ties Ayodhya, Korea

-Rahul Datta

Following a celestial dream, the Ayodhya king married off his daughter to South Korea's King Suro. A plaque at Queen Huh's monument near the Saryu mentions this legend.

A visit to monuments like the Taj Mahal, Qutub Minar and Red Fort — to name a few — figures prominently on the itinerary of foreign dignitaries when they visit India. However, Ayodhya — in the news nowadays for altogether different reasons — tops the "must-see" list of South Korean Defence Minister Kim Tae- young when he lands here on an official visit.

The proposed official visit to New Delhi, likely to take place next year, and then a personal visit to Ayodhya was finalised during his recent meeting with Defence Minister AK Antony. The two Ministers were holding a bilateral meeting on the sidelines of the Association of South East Asian Nations (ASEAN) Defence Ministers' conclave in Vietnam last week when Antony invited his Korean counterpart to visit New Delhi. Antony urged Kim Tae-young to visit some prestigious defence establishments in the country and he readily agreed. While the talks were on, one of Antony's aides suggested that Kim should also visit Ayodhya and everyone was surprised with this rather unusual proposal.

The Korean delegation was in for a pleasant surprise when the reason for this request was revealed. Ayodhya has a link, dating more than 2,000 years back, with South Korea! Legend goes that Queen Huh, wife of King Suro who was the founder of Karak kingdom in Korea, was born in Ayodhya. Her father, the then king of Ayodhya, was advised in a dream by supernatural powers that he should marry off his daughter to the Korean king. Subsequently, she was sent there in the middle of the first century AD. In fact, a plaque inscribed at Huh's monument at the banks of river Saryu narrates this story.

The legend is part of South Korean history and came out in 2001, when the mayors of Ayodhya and Kim-Hae town of South Korea signed a "sister city bond" to commemorate their historical ties. The three- metre-high stone monument weighs more than 7,500 kg. Stone for the monument was brought in from South Korea and it was built according to Korean traditions.

The Pioneer, New Delhi. October 25, 2010

Diary of Events

November 1 The RSS has decided to hit the streets on the issue of saffron terror. The outfit, which has been on the backfoot after the names of some of its functionaries were linked with cases of bomb blasts, has drawn up protest plans. RSS has also decided to launch a campaign to highlight its demand for construction of a Ram temple at Ayodhya. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ India's religious and political sensitivities over what a cow can eat has cast a serious shadow over efforts to provide American dairy produce access to Indian markets. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

November 2 After struggling for almost four years to get the necessary government approvals, the Al Jazira channel is now in last stages of completing formalities and is likely to begin testing signals later this month. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

November 4 The Congress has become an agency where corruption as well as the probe are done by its own members, said Shahnawaz Husain. *The Hindustan Times, Delhi, p. 10.*

_________ A witness, who lost his three brothers during 1984 anti-Sikh riots told a trial court that a Hindu man was arrested by police for providing shelter to Sikhs during the carnage. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

November 5 Now, games and sports will be a compulsory part of school education. CBSE has written to schools advising them to organise physical activities and games for all students till class X everyday. *The Times of India, Delhi, p. 7.*

Diary of Events (contd.)

_________ Perturbed over allegations against top military officers, including some former services chiefs, in the Mumbai housing scam, Army Chief General V.K. Singh asserted that action would be taken against those found guilty irrespective of who it was. *The Hindu, Gurgaon, p. 12.*

November 7 The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) has accused the Union government of standing "helplessly in front of anti-nationals like Hurriyat faction chief Syed Ali Shah Geelani and writer Arundhati Roy" while it was overzealous in harassing organisations like the RSS. *The Hindu, Gurgaon, p. 9.*

November 8 The Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS) the attempts of the UPA government at the Centre to link the organisation with terrorism as a conspiracy to consolidate the Muslim vote bank and asserted that it would fight it at all levels. *The Tribune, New Delhi, p. 10.*

November 9 US-Yemeni radical cleric Anwar al-Awlaki has called for the killing of Americans "without hesitation" and accused Iran of trying to impose control over Sunnis in the Gulf. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

November 10 Educational society Ramjas Foundation, lost its land to a 41-year-old proposal for "planned development" of Delhi, but became instrumental for the Supreme Court to hold that a non-Muslim can also create a Wakf under the Muslim law. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

_________ China's State-run media played down Barack Obama's endorsement of India's bid for a permanent seat in the UN Security Council, saying the US President has handed out a cheque to New Delhi that cannot be easily cashed. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

November 11 A Kashmiri Pandit, Abhishek Kaul, filed a criminal complaint against Roy, Geelani and a former professor acquitted SAR Geelani, accusing them of sedition, waging a war against India, disrespecting the National Flag, creating hatred among communities and criminally intimidating, those who protested their seditions remarks. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ The government of Pak expressed its opposition to US President Barack Obama's endorsement for India's efforts to gain a seat at the high table during a meeting of the cabinet chaired this afternoon by Prime Minister Yousuf Raza Gilani. *The Tribune, New Delhi, p. 15.*

_________ Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) chief Mohan Bhagwat sought to shield the sangh from being projected as a terror outfit. Sangh-bashing, he claimed, was not new. "RSS was banned in 1948 also," he said. "We faced a similar situation yet again during the days of Emergency." *The Times of India, New Delhi, p. 10.*

November 13 Noted Pakistani human rights activist Asma Jahangir said that easy divorce under the present matrimonial law in her country is ruining the lives of millions of women, leading to various societal problems. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 7.*

November 14 UPA chairperson Sonia Gandhi should file a defamation suit against former RSS chief K.S. Sudarshan for his derogatory remarks against her, RSS ideologue M.G. Vaidya said. "Sonia Gandhi should not take the derogatory remarks against her lightly but initiate legal action." *The Mail Today, New Delhi, p. 7.*

_________ There was a shortage of 630 IPS officers and the annual intake was being increased by 60 additional heads to meet the shortage. But that is clearly not enough. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ The BJP warned the Congress against attacking RSS offices over former Sarsanghchalak KS Sudarshan's remarks against Sonia Gandhi, more so after the Sangh regretted the comments. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

November 15 The gates of the world famous Badrinath shrine would be closed to the public for the winter season on November 18. The ceremonial proceedings for closure of the gates have started. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

November 16 The Delhi High Court sought a reply from the Delhi government as to why a criminal case should not to be registered against Syed Ali Shah Geelani, writer Arundhati Roy, University professor SAR Geelani over their alleged anti-national speeches. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

November 17 China has dammed the Brahmaputra river in Tibet for the first time in order to begin the main construction work on a 510 MW hydropower station project, notwithstanding concerns raised by India in this regard. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

November 18 Sitting on mineral deposits worth nearly $1 trillion, Afghanistan has invited India to participate in the mining sector in the battle-scarred nation, amid increasing Chinese interest in exploiting the mineral-rich fields of Afghanistan. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

_________ RSS leader Indresh Kumar sent a legal notice to Rajasthan Home Minister Shanti Dhariwal for what he called slanderous and malicious allegations against him. *The Indian Express, New Delhi, p. 5.*

_________ Congress member of the Lok Sabha, Satpal Maharaj, is set to introduce a private member's Bill seeking compulsory teaching of yoga in schools in the current winter session of parliament. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

November 19 Scientists claimed a breakthrough in solving one of the biggest riddles of physics, successfully trapping the first, "anti-atom" that they hope will help them understand what happened to all of the antimatter created by the Big Bang. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 18.*

_________ Eleven years after the Kargil war, the Pakistan Army which has been denying its role in the conflict has quietly put the names of 453 soldiers and officers killed in the battle on its website. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

November 22 Dawood Ibrahim is believed to be helping in efforts to smuggle a group of terrorists linked to al-Qaeda into Europe for Mumbai-style attacks in Germany, according to

Diary of Events (contd.)

German news magazine *Der Spiegel*. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

_________ Himachal Chief Minister Prem Kumar Dhumal renewed his demand for immediate construction of the pending railway line up to Leh in Ladakh warning the Government of China's aggressive designs and plans around the Indian borders. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

November 23 The United Arab Emirates has supported India's case for a permanent seat in the United Nations Security Council. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

_________ Muslim children attending weekend schools in Britain are being taught how to chop off hands of thieves as per the Sharia law and are being told that Zionists are plotting to take over the world reported. *The Indian Express, New Delhi, p. 14.*

November 24 Rescuers trawled a muddy river for more bodies and Cambodia prepared for a day of mourning following a stampede by thousands of festival-goers that left at least 378 dead and hundreds injured. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

November 25 The RSS has decided to put aside "all other works for the month of December" to mobilise public opinion for construction of a "grand" temple at Ayodhya. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ Nepal's Maoist supremo Pushpa Kamal Dahal Prachanda has identified India as the arch enemy and urged the party to brace for a war with the southern neighbour, reports said. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ For the first time after the 2002 Gujarat riots, there is evidence to suggest that Muslims have voted in favour of an alliance that includes the BJP. *The Indian Express, New Delhi, p. 1. & 2.*

_________ Voters in Bihar delivered a memorable and truly massive mandate to the NDA led by Nitish Kumar of the Janata Dal (United) and Sushil Kumar Modi of the B.J.P. a landslide that had eluded even Lalu Yadav at his peak. Even more spectacular was the strike rate of the BJP, which contested 102 seats and won 91 of them, winning virtually 9 of the 10 seats the party contested. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

November 26 Ridiculing the posters depicting Congress president Sonia Gandhi as 'Mother' and party's general secretary Rahul Gandhi as 'Lord Krishna' the State BJP said that this exercise was the height of the sycophancy of the Congress leaders. *The Times of India, New Delhi, p. 12.*

November 27 A local court has awarded three years rigorous imprisonment (RI) to a train driver for running over three elephants 12 years ago. The pachyderms were crossing a railway track passing through Rajaji National Park when the accident occurred. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

November 28 For the first time, a Muslim candidate contesting on a BJP ticket from a Muslim-dominated constituency won the election and overnight, became the talk of the town. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

November 29 In one of the most barbaric acts committed by the insurgents in Odisha, five people, including a woman and a three-year old child, were killed when Maoists blew up the ambulance in which they were travelling in Kandhamal district. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

November 30 China pulled out all stops to achieve its target of 200 gold medals at the Guangzhou Asiad. It allegedly denied entry to a strong Indian equestrian team. The Chinese Water Polo Association (CWA) 'sponsored' the Indian women's team, even shelling out Rs 6 lakh for the contingent's air travel, to prevent the event from slipping into the non-medal category due to insufficient participant yet Chinas Medal tally stopped at 199. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Days after visiting New Delhi, US Secretary of State Hillary Clinton clubbed India, Brazil, Germany and Japan as "self-appointed front runners" for permanent seats in Untied Nations Security Council (UNSC). *The Tribune, New Delhi, p. 1. & 11.*

December 1 The sensational details leaking out of the Nira Radia tapes touched a raw nerve with the Supreme Court after it discovered that one of the tapes contained exchanges about a Rs 9-crore bribe paid to a high court judge for a favourable judgement. The judge later retired as the Chief Justice of the Punjab & Haryana High Court. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

December 2 US diplomats in Islamabad were told Pakistan was working on producing smaller, tactical nuclear weapons that could be used on the battlefield against Indian troops. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ Wipro Ltd chairman Azim Premji transferred 213 million shares and valued at Rs. 8,846 crore to an anonymous trust as an endowment to fund the development activities of the Azim Premji Foundation for education and building better society. s*The Mint, New Delhi, p. 1.*

December 3 "I don't plan to come to India ever again," says Pervez Musharraf. The former Pakistan President and Army chief, was denied a visa by the Indian government. "I have no words to explain my disappointment," Musharraf told *The Indian Express* over the phone. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Pakistan's political and military elite have been shaken by damaging disclosures about the country's foreign policy and internal politics in hundreds of secret US diplomatic cables released by wikiLeaks, with the media screaming 'WikiWreaks havoc' 'WikiLeaks bombs rock Islamabad'. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ China will not remain 'a silent spectator' if any country intervened in the affairs of Nepal, according to a top leader of the Maoist party, whose supreme Prachanda has often accused New Delhi of interfering in Nepalese affairs and 'dictating' to its leadership. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

December 5 The wikiLeaks cablegate expose has put unex-

Diary of Events (contd.)

pected spotlight on the Sachar Committee report on the status of Muslims in India being used by Pakistani president Asif Zardari. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

_________ The RSS has been working to unite the Hindu society since beginning and it will continue to work in this direction, said RSS Sarsanghachalak Shri Mohan Bhagwat. He was addressing a gathering of swayamsevaks at Maharana Pratap Inter College in Gorakhpur on November 14. Islamic terrorism is not the real problem of our country today rather weak Hindu society is the main problem. *The Organiser, New Delhi, p. 17.*

December 7 China continues to strike it rich in Tibet as geologists discovered 102 types of mineral deposits in over 3000 mine beds with an estimated value of about $100 billion. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

_________ In the public rally Jammu & Kashmir Congress Minister for Health & Horticulture Sham Lal Sharma has advocated the cause of "free Kashmir". *The Pioneer, Delhi, p. 1.*

_________ A pair of suicide bombers disguised as policemen killed 50 people in an attack targeting a tribal meeting called to discuss the formation of an anti-Taliban militia in northwest Pakistan, officials said. *The Pioneer, Delhi, p. 11.*

_________ Leaders of six US-allied Gulf Arab nations began two days of talks dominated by their growing concern over Iran's disputed nuclear program, with one senior military official calling for greater Gulf cooperation in missile defence. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ US Secretary of State Hillary Clinton has identified Saudi Arabia as the world's largest source of funds for terror outfits such as Lashkar-e-Tayyeba, Al Qaeda and the Taliban. A secret Clinton memo, revealed by *WikiLeaks. The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ With seasonal vegetables going out of reach for the common man and milk prices steadily on the rise, the food inflation has galloped to a new high of 18.32 per cent. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

December 8 A two-year-old girl, was killed and over 20 others, including some foreigners, were injured when a bomb hidden in a metal container, exploded leading to a stampede during Ganga aarti amid huge congregation of devotees at Sheetla Ghat in Varanasi. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

December 9 Geneva: European scientists reported the creation and capture of anti-hydrogen atoms in a novel magnetic trap and said it put them on track to solving one of the great cosmic mysteries - the make-up of anti-matter. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

_________ Branding Pakistani intelligence agencies mainly the ISI as a "rogue agency", the country's top nuclear scientist A Q Khan has said that it takes orders from the Army chief and not the civilian government. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

December 10 Bihar chief minister Nitish Kumar has declined to rename Patna as Patliputra. Nitish said there was no need to restore the ancient name of Patliputra merely because of its past glory. *The Mail Today, New Delhi, p. 9.*

_________ An Indian scientist today announced the discovery of carbon-rich planet orbiting a distant star about 1200 light years away from the earth, a find that throws open the possibilities of existence of diamond-studded stars. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ A Kashmir University professor was arrested for framing a question paper for first year BSc students that included. 'Are stone pelters the real heroes?' *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

December 12 Hemant Karkare's widow today accused Congress general secretary Digvijay Singh of trying to play politics with her husband's death, and said she had no doubt that the chief of the Maharashtra Anti-Terrorism Squad (ATS) was killed by the Lashkar-e-Toiba terrorists who carried out the 26/11 attack. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Secret cable on WikiLeaks says Cong used Hemant Karkare killing to pander to Muslim fears ahead of 2009 elections. 'The entire episode demonstrates that the Congress will readily stoop to the old caste/religious-based politics if it feels it is in its interest'. - David Mulford, US Ambassador to India (2004-08). *The Mail Today, New Delhi, p. 1. & 4.*

December 13 Sri Lanka has scrapped the Tamil version of its national anthem at official and State functions, a move likely to further alienate the ethnic Tamils in the country. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ Siddique Sajid, editor of Pakistan's online news agency, has been sacked after it published a fake WikiLeaks report that New Delhi allegedly played a role in destabilizing the country's Balochistan province. *The Pioneer, Delhi, p. 8.*

_________ A top Singaporean diplomat described India as "stupid", saying the country was "half in, half out" of the ASEAN grouping, according to leaked US cables. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

_________ Whether in Ayodhya or Kashmir, Addressing a well-attended "Viraat Hindu Sammelan", organised by the Vishwa Hindu Parishad, as part of its month-long, nationwide programme on the Ayodhya temple, RSS Sarsanghchalak Mohan Bhagwat said the division of land has never resolved any dispute. *The Indian Express, New Delhi, p. 1. & 2.*

December 15 The three public sector oil marketing firms are raising prices for the fifth time since the government in June lifted its control on the fuel. *The Times of India, Delhi, p. 17.*

_________ The Sunni Waqf Board, which was awarded one-third of the disputed site at Ayodhya by the Allahabad High Court, today challenged the September 30 verdict, contending that the court relied on faith, and not evidence. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

December 16 Two suicide bomb attacks outside a mosque killed 39 people and wounded more than 100 during a Shi'ite

Diary of Events (contd.)

religious ceremony in the southeastern Iranian city of Chabahar local media reported. *TOI,, Delhi, p. 20.*

_________ Dyfed Thomas, a British Film Maker is planning a movie based on R.S.S. "We will start shooting it soon. The most amusing part is that no matter where I go in Delhi if people find out that I am making a movie they ask me to cast them." *The Times of India, New Delhi, p. 3.*

_________ Former Commerce, Law & Justice Minister Subramanian Swamy filed a criminal case in a city court seeking prosecution of former Minister of Communication & IT A Raja in the 2G spectrum scam. "Raja committed offences on January 11, 2008 by the act of simultaneously awarding 122 licences to nine applicants who were able to produce demand drafts for Rs. 1,650 crore of thereabouts, within 30 minutes of opening of the counter at the Sanchar Bhavan," Swamy alleged. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

December 17 BJP president Nitin Gadkari received a warm welcome when he visited the Israel Parliament along with his party delegation. The Speaker welcomed Gadkari and the delegation to the Israeli Knesset (Parliament) where the BJP chief was joined by the treasury as well as Opposition benches. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ Nearly four decades after the 1971 war, Pakistani school textbooks continue to focus on conspiracy theories involving India, Russia and the US regarding the creation of Bangladesh while glossing over the Pakistan Army's atrocities in the erstwhile East Pakistan. *The Pioneer, Delhi, p. 12.*

December 18 A decade after he took a sabbatical from active politics, former BJP stalwart KN Govindacharya will attempt to revive his Jan Andolan - a parallel political campaign - he conceived during the initial years of his *vanvas*. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ Rahul Gandhi told US ambassador Timothy Roemer that Hindu terror groups could pose a bigger threat to India than Muslim militant groups like the Lashkar-e-Taiba, according to a cable released by WikiLeaks. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Hanif, who has a doctorate in Sanskrit with a specialisation in the *Gita*, is an authority on the Hindu holy book. The *Gita* for him is the way of life, and Islam is his faith. *The Mail Today, New Delhi, p. 5.*

December 19 NGOs in India received almost Rs. 10,000 crore as contributions from foreign donors in 2007-08. Christian organisations continued to dominate both the lists of top donors and receivers, Delhi-based organisations emerged as the biggest beneficiaries and United States, the UK and Germany respectively are the biggest donor countries. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

December 20 Reports in the official Chinese media that the Sino-Indian border is only 2000 km-long - excluding the 1,600-km stretch that separates Jammu & Kashmir from Xinjiang and Tibet - have created a flutter in the Indian media. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 13.*

_________ Thousands of aspiring teachers who registered for their PhD programmes before June 11, 2009, need not take the National Eligibility Test (NET), the University Grants commission has decided, relaxing tough new norms introduced last years. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 12.*

_________ Chinese Premier Wen Jiabao vowed to boost strategic cooperation with Pakistan as he wrapped up a three-day visit to Islamabad that concluded deals worth around $35 billion (Rs. 1.6 trillion). *The Pioneer, New Delhi, p. 3.*

_________ Barely a few months after the government had promised to control the spiralling food prices, the common man is once again feeling the heat of the rising food prices. Prices of vegetables like green peas, beans, carrots, ginger and garlic have spiralled in the last week. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

December 21 Attacking Rahul Gandhi for his reported comments that radical Hindu groups posed a greater threat to India than the Lashkar-e-Toiba, the Shiv Sena asked why The Gandhis, had love only for Islamic and other terrorists. "There is a massive conspiracy to decry the Hindus as terrorists in their own Hindustan. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

_________ The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) has reacted strongly to the anti-Sangh tirade by senior Congress leader Digvijay Singh. The organisation said the diatribe was an effort by the ruling party, "which is itself surrounded by several controversies", to divert people's attention from the real issue. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ Israel has taken grave exception to Congress leader Digvijay Singh's comparison of RSS with the Nazis. No comparison can be made with the Nazi Holocaust in which six million Jews were massacred solely because they were Jewish. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

December 22 India, Russia sign 29 pacts, Both nations to jointly develop fifth generation fighters; set trade target of $20 bn by 2015. Moscow asks Pak to punish 26/11 attackers; supports India's bid for UNSC seat. *The Tribune, New Delhi.*

December 23 Indian Army chief VK Singh was conferred the title of 'honorary General of Nepal Army, even as he asked Nepal not to allow any activity directed against India from its territory. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

_________ The Central Bureau of Investigation (CBI), probing Commonwealth Games-related irregularities and corruption cases, has not been able to get hold or crucial files which seem to have simply gone missing from the Organizing committee office. *The Times of India, New Delhi, p. 12.*

December 24 For many years, the Congress and its leaders are trying to harm the RSS and my image. But they have been exposed by the WikiLeaks-Indresh. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

December 27 After examining the feasibility report of the Bilaspur-Manali-Leh railway line, the Railway Ministry has

Diary of Events (contd.)

forwarded the proposal to the Planning Commission of India for approval. Link had strategic importance for the country as it would provide connectivity to border areas in Ladakh region. The ministry was also actively considering conversion of narrow gauge Pathankot-Jogindernagar rail track into broad gauge and its further extension up to Mandi and link the Manali-Leh rail line with the Pathankot-Jogindernagar line at Mandi. *The Indian Express, New Delhi, p. p. 7. & 10.*

_________ A host of celebrations mark the 213th birth anniversary of poet Mirza Ghalib. "He is one of the most secular poets we have ever had," said Gulzar. *Hazaro khwahishe aisi, ki har khwahish pe dam nikle, Bahut nikle mere armaan, phir bhi kam nikle (Thousands of desires, each worth dying for... many of them I have realised, yet I yearn for more). The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

December 28 Thirty-five years after the Emergency, the Supreme Court has admitted that it "violated the fundamental rights of a large number of people in this country" by its most controversial decision of 1976 endorsing the Emergency. *The Pioneer, New Delhi, p. 1. & 4.*

_________ "Godse was a staunch patriot. He had not come from Italy. His blood was boiling over Hindustan being divided and the killing of lakhs of Hindus during the Partition," said an editorial in the Sena organ *Saamna. The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

_________ Twenty-seven Hindu families from Pakistan's Balochistan province have approached the Indian High Commission for political asylum after a series of kidnappings and killings that targeted the minority community, an official has said. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

December 29 While declaring her assets and liabilities, sitting Supreme Court judge Gyan Sudha Misra, the only woman judge in the SC at present, has listed the marriage of her two daughters in the "liabilities" column, apparently without considering anything to be amiss. *The Times of India, Delhi, p. 2.*

_________ The state-run China Radio International is trying to buy frequencies to launch services in India in a move to widen its influence in the country. It currently broadcasts in four Indian languages - Hindi, Bengali, Urdu and Tamil - from Beijing. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

Select Articles

Soot behind the glitter : Joginder Singh, The Pioneer, New Delhi, November 1, 2010, p. 8.

The UPA Government is not in the least interested to unmask and punish those who have looted the nation in the guise of the CWG.

Ill-informed attack on RSS : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, November 4, 2010, p. 9.

Politicians who accuse the RSS of 'terrorism' have got their facts all wrong. Zakir Hussain famously said the Muslims should learn mutual love, cooperation and organisation-building from RSS. Even Jawaharlal Nehru praised the Sangh's spirit of revolution. Maligning the RSS is a recent phenomenon to appease extremist elements in the Muslim community. Notwithstanding the ignorance of 'secular' politicians influential leaders including Jaya Prakash Narayan, have placed great faith on the Rashtriya Swayamsevak Sangh for meeting the challenge of creating a new India without any communal divisions.

India's creed of greed : Samar Halarnkar, The Hindustan Times, New Delhi, November 4, 2010, p. 12.

The party that helped institutionalise corruption will not talk about it. This denial cripples the Congress's own politics and India's future.

Sunni Tehreek-Islamabad's most favoured sect : Imtiaz Ahmad, The Hindustan Times, New Delhi, November 5, 2010, p. 17.

Karachi Noor Masjid in the heart of Karachi is disputed territory. And like any such territory, it stands barricaded along with a well guarded entrance. Officials say that there are several dozen such mosques all over the city where possession is becoming a point of war. Sunni Tehreek workers also fear that the Taliban will bomb their mosques as it does shrines. This is yet another war that is brewing in Pakistan's urban centres, warn many.

Course correction, Two men in a boat-Dr Singh, Obama and the Pakistan army : C. Raja Mohan, The Indian Express, New Delhi, November 5, 2010, p. 12.

In their talks this weekend, the two leaders must accept a new proposition. If neither of them, on his own, can wean the Pakistan army from the extremists, they have no alternative but to work together. If the Pakistan army is not ready for such an accommodation a range of options present themselves to Dr Singh and Obama. Foremost among them is removing all political obstacles for a purposeful and comprehensive bilateral cooperation in countering terrorism. Second, vigorous political consultations and robust security cooperation among Delhi, Kabul and Washington will surely encourage Rawalpindi to rework its regional sums.

Why Hinduism is science-proof : Dipankar Gupta, The Times of India, New Delhi, November 8, 2010, p. 16.

Unlike creation-centric Christianity, the Hindu faith remains unchallenged by reason. Interestingly, while Christianity clashed with the physical and exact sciences in the West, in India, Hinduism has been threatened only by history and the social sciences. Consequently, the Hindu faith remains unchallenged by reason and Ram Lalla might even win his case someday.

India bashing at its worst : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, November 8, 2010, p. 8.

The Congress simply ignores anti-national forces and lets them run riot while heaping praise on the dynasty. Nothing else matters for the party.

The Taliban's social wars, All about imposing its version of Islam : D. Suba Chandran, The Tribune, New Delhi, November 8, 2010, p. 8.

Select Articles (contd.)

What has gone unnoticed or under-noticed are the other wars that the Taliban and its franchisees are fighting on the social front. At least, three specific social wars of the Taliban need to be understood and countered. The first is the Taliban war against local culture and tradition of Pakistan. The second war against society led by the Taliban targets Sufism. The majority in Pakistan, especially in the rural areas, adhere to sufism and believe in Sufi saints and their teachings. The Taliban's third war is sectarian, and is carried out by the TTP and its Punjabi partners.

US Kashmiris up the ante : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, November 9, 2010, p. 8.

Kashmiri Americans supporting J&K's secession are inching closer to Obama Administration. Their agenda is to push for a separate Islamic state of Kashmir. Our home-grown seditionists continue to mouth treason and provoke the authorities, which are desperate to turn a blind eye to their antics. For India, poetic justice came when the All-Party National alliance in Muzaffarabad, Pakistan-occupied Kashmir decided to observe October 22 as 'Black Day' from 2011 onwards to protest the 1947 Pakistani invasion which partitioned the erstwhile princely state. It seems the people of the region have had enough of the Islamic paradise.

The eagle has landed : Harsh V Pant, The Times of India, New Delhi, November 9, 2010, p. 16.

Obama's Asia visit signals the US retains its role as the principal balancing force in the region. There is clamour for American leadership in the Asian region, as none of the regional players wants China to emerge as the dominant actor.

Muslims-The changing voting pattern : Syed Nooruzzaman, The Tribune, New Delhi, November 16, 2010, p. 9.

Over the years, there has been an interesting change in the Muslim voting behaviour. Once considered as the vote bank of the Congress; they are now exercising their right of franchise in favour of the BJP too, besides some other political parties.

India to expose Pak role in fake currency : Ajay Banerjee, The Tribune, New Delhi, November 17, 2010, p. 13.

The fake currency is pumped in through Bangladesh, Nepal and Dubai and sometimes through Kuala Lumpur.

New Delhi would raise questions as to why airport authorities in Pakistan were allowing people to carry such huge amount of Indian currency to other countries like Malaysia Nepal or elsewhere.

Celebrating an old relationship : Rajiv Bhatia, The Pioneer, New Delhi, November 17, 2010, p. 9.

Bilateral relations between India and Mexico have been recently elevated to a 'privileged partnership'. Further cooperation in the fields of economy, science, education and culture will not only help us revive our traditional ties with Mexico but also deepen India's relationship with Latin America as a region.

China is ahead, but India can catch up : Raghav Bahl, The Hindustan Times, New Delhi, November 18, 2010, p. 10.

If India invests in infrastructure far ahead of the curve, takes bold entrepreneurial policy risks, welcomes greater private investment, and think in terms of quantum changes, we can bridge the gap with our neighbour. The odds seemed to overwhelmingly favour India in 1978; China seemed such a hopeless case. Yet today, China's economy is four times India's.

Khamenei remark-India hits back, abstains at UN vote : Shubhajit Roy, The Indian Express, New Delhi, November 20, 2010, p. 4.

Days after Iran's supreme leader Ayatollah Ali Khamenei spoke of Kashmir "struggle" against "aggressions" of the "Zionist regime", India took strong exception to these remarks. It decided to abstain on a resolution at UN - for first time-which slams Iran's track record on human rights.

The amateurs in charge : K. Shankar Bajpai, The Indian Express, New Delhi, November 20, 2010, p. 15.

November 1962 was a national disaster, all the more painful for being so self-inflicted: blinding ourselves to it is to invite repeats. Panditji must bear his share of responsibility, but the totality of our failure extends far beyond individuals. The release of Nehru's letters shows how far we are from learning the real lessons of 1962.

Who spawned this culture? : Chandan Mtira, The Pioneer, Agenda, New Delhi, November 21, 2010, p. 4.

Sonia Gandhi's lament against greed and graft sounds ironic considering the Congress's predominant role in breeding corruption in the country.

Crouching Dragon, meek eagle : G Parthasarathy, The Pioneer, Agenda, New Delhi, November 21, 2010, p. 6.

China's assertiveness in East and Southeast Asia grows as American power wanes. Analyses the reasons of the newfound Chinese aggression and how the world, particularly India, is trying to cope with it.

Myanmar after Suu Kyi's release, Military junta not perturbed : S.D. Muni, The Tribune, New Delhi, November 22, 2010, p. 8.

It is difficult to say if the Myanmar regime would respond to Suu Kyi's call for "national reconciliation". The regime may carefully watch how she goes about reuniting her lost and alienated associates.

A bitter harvest : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, November 22, 2010, p. 6.

The Congress is responsible for the perversion of political discourse in India. It must reap the bitter harvest of the poison seeds it has sown.

Congress at the crossroads : Minhaz Merchant, The Times of India, New Delhi, December 23, 2010, p. 20.

Manmohan Singh has absolute accountability but not absolute power; UPA chairperson Sonia Gandhi has absolute power but not absolute accountability. This lies at the heart of India's governance deficit. The party is yet to see that principled, not populist, politics wins trust and votes.

Look beyond Rawalpindi : C. Raja Mohan, The Indian Express, New Delhi, November 26, 2010, p. 14.

To deter the Pakistan army from facilitating future cross-border terror attacks, India needs to act on a range of fronts. These include more purposeful modernisation of the armed forces to generate some

Select Articles (contd.)

military pressure against Rawalpindi and strengthening India's nuclear arsenal which continues to lag behind that of Pakistan. India must also focus on building up a serious missile defence programme that can introduce some uncertainty into Rawalpindi's strategic calculus.

Integrity gap of Congress : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, November 27, 2010, p. 8.

No Congress leader would find place on a list of honest Chief Ministers. The explains the stunning victory of the JD(U)-BJP alliance in Bihar.

Does Bihar show the way? : Chandan Mitra, The Pioneer, New Delhi, November 28, 2010, p. 4.

Post-Mandal, caste remains a key factor but vote-banks have been dented by the mantra of development, holding out hope for Uttar Pradesh. Perhaps the most significant aspect of the Bihar result is the palpable division in the Muslim vote, which has hitherto determinedly stuck to Mr. Lalu Prasad Yadav or strayed occasionally to the Congress.

Pakistan's manly cowards who lack guts : Nadeem F Paracha, The Pioneer, New Delhi, November 29, 2010, p. 9.

Many Pakistanis can be seen shouting and going hoarse in the throat discussing India and the US's nefarious designs in the region, but they go all quiet when some psycho flag-wavers of faith and *jihad* take responsibility of an appalling act of terror.

Rahul paid for retrograde politics : Sidharth Mishra, The Pioneer, New Delhi, November 29, 2010, p. 3.

BJP's growth has been propelled by the same set of votes, largely the upper caste, which the Congress too eyes. But these voters will not vote for the hand symbol if Rahul Gandhi raises hands together with Ranjeet Ranjan and Lovely Anand.

Strategic alliance to check assertive China : Lt Gen Harbhajan Singh (Retd), The Tribune, New Delhi, December 1, 2010, p. 9.

India and US have mutual interests not to allow China to dominate this part of the world and the strategic understanding moving towards military co-operation between the two countries has strong logic.

He gave a crushing defeat to tottering Mughals : General Baghel Singh, The Organiser, New Delhi, December 5, 2010, p. 11.

A very few Indians know about General Baghel Singh (1730-1802). He paid the Islamic fundamentalists in their own coins and made them construct Gurdwaras in Delhi in 1783. He paved the way for self assertion of Indians after the slavery of nine centuries under Islam.

Put integrity before politics : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, December 6, 2010, p. 9.

Buddhadeb Bhattacharjee and Pranab Mukherjee traded praise for Aligarh Muslim University at the foundation of its branch in West Bengal to further their personal political interest. But such fawning over an institution whose Professors once proposed balkanisation of Hindustan smacks of implicit contempt for the integrity of the country.

Jagan rattles dynasty : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, December 7, 2010, p. 8.

By rebelling against the Nehru-Gandhi dynasty whose control over the Congress is unquestionable, Jaganmohan Reddy has shaken the party high command.

Islamist Turkey vs Secular Iran? : Daniel Pipes, The Pioneer, New Delhi, December 8, 2010, p. 9.

As the secular Turkey founded by Ataturk threatens to disappear under a wave of Islamism, the Islamist Iran founded by Khomeini teeters on the brink of secularism.

Engaging with Myanmar : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, December 9, 2010, p. 8.

India has done well to deal with Myanmar in a spirit of constructive engagement rather than toe the West's line. This has fetched enormous benefits.

Kashmir always part of India : Abhijit Bhattacharyya, The Pioneer, New Delhi, December 14, 2010, p. 9.

Kashmir has always been integral to India as it existed before it became a modern nation state. Those who question this are ill-informed and poor students of history.

The liars collective of Pakistan : Nadeem F Paracha, The Pioneer, New Delhi, December 16, 2010, p. 9.

By publicising fake WikiLeaks cables, a section of the Pakistani media has not only become an international laughing stock but has also shown how low it can stoop to protect its corrupt patrons with sinister designs and malign India.

Yoga essentially Hindu, anti-Christ : Albert Mohler, The Pioneer, New Delhi, December 18, 2010, p. 9.

One of the biggest controversies to sweep intellectual circles of the developed world in 2010 was generated by this article, penned by an evangelist obviously alarmed at the potential of Yoga to unite mankind into *Vasudhaiva Kutumbakam.*

Nehru's stubbornness led to 1962 war with China? : Shastri Ramachandaran, The Times of India, New Delhi, December 19, 2010, p. 13.

Nehru's refusal to negotiate, and the 1960 rebuff to Chou En-lai when he was visiting and appeared ready to settle the issue - may well have sowed the seeds of the 1962 India-China war.

Supremely injudicious : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, December 21, 2010, p. 8.

Judicial overreach is transcending separation of powers between the executive, legislature and judiciary, thereby eroding a basic feature of the constitution.

Bihar proves education works : JS Rajput, The Pioneer, New Delhi, December 22, 2010, p. 9.

The JD(U)-BJP alliance has earned votes cutting across caste lines because its efforts to change the education system and make it

Select Articles (contd.)

accessible have touched all hearts. Giving education the primacy it deserves in policy matters is not only a sure-shot recipe to win votes, but also to build a strong nation free of the twin ills of corruption and casteism.

Infrastructure cauldron on the eastern frontier : Maj Gen Raj Mehta (Retd), The Tribune, New Delhi, December 24, 2010, p. 9.

Reports of China building and strengthening its existing infrastructure in Tibet continue to flow in regularly. The latest is that China is building 24 new projects along its side of the Brahmaputra river. While China has constructed a vast network of roads, tunnels, railways and airfields that enable mass rapid movement of troops to the border, the picture on the Indian side continues to be dismal, which is fraught with strategic and tactical disadvantages.

As the West slept, Islamists plotted : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, December 24, 2010, p. 9.

Despite consistent efforts to contain *jihad*, the West has been caught asleep over the rising tide of Islamism in West Asia that is frightfully winning in terms of either public opinion or actual control.

Why museums should start digging : Bernard Frischer, The Indian Express, New Delhi, December 24, 2010, p. 13.

From Pataliputra to Pompeii, many of the world's cultural riches remain hidden. Global museums should partner with the states that house these sites.

Understanding nature of matter : Manjit Kaur, The Tribune, New Delhi, December 24, 2010, p. 12.

CMS experiment has also recorded Z-bosons produced in collisions of heavy ions for the first time. Though Z-bosons were discovered in 1983, they have never been seen in heavy ion collisions before.

Strategic stability, tactical aggression : Gurmeet Kanwal, The Pioneer, New Delhi, December 25, 2010, p. 9.

The Wen Jiabao visit proved to be a watershed in Sino-Indian relations because both sides have struck a mutually assured development paradigm despite retaining the option for conflict. As for the border dispute, it's left for the generations.

In Egypt, Israel-bashing is back on top : Shyam Bhatia, The Tribune, New Delhi, December 27, 2010, p. 18.

Levels of illiteracy are high in the Arab world is illiterate which makes it much easier for Arab leaders and their governments to sell their people even the most ridiculous story, such as the ones about the Israeli sharks and rats.

The communal faultline runs deep : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, December 28, 2010, p. 9.

From Europe to Asia, secularism has been transmogrified by its practitioners into meaning something which it was not meant to mean: Appeasement of minority communities. The Pope now bemoans the effects of 'secularism' in Europe where Christianity is under assault. If we look at Asia, specially India, we will find the same faultline running deep.

India lacks gumption : Sunanda K Datta-Ray, The Pioneer, New Delhi, December 30, 2010, p. 8.

New Delhi's willing-to-would-afraid-to-strike attitude towards Beijing doesn't suggest a robust candidate for the world's high table.

The end of Shangrila : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, December 31, 2010, p. 8.

A new highway being built in southern Tibet, close to MacMahon Line, has ominous implications for India's national security.

Nowhere people : Anuradha Dutta, The Pioneer, New Delhi, December 31, 2010, p. 9.

Hounded by Taliban, Hindus in Pakistan are a persecuted lot. Kashmiri Pandits are not alone in being driven out of their homes by Muslim zealots, militants and mercenaries. Hindus in Pakistan, Bangladesh and Afghanistan, threatened by the Taliban are seeking refuge in other countries, especially India.

Book Reviews

Akhilesh Jha : Katasraj, Ek Bhooli Bisri Dastaan, Remadhav, Rs. 700/-

For readers and book-lovers, Akhilesh Jha's *Katasraj: Ek Bhooli Bisri Dastaan* provides not only a historical account of the place situated in western Pakistan, but also a panoramic view of the Hindu temple complex dedicated to Lord Shiva. It is a successful attempt by the author to highlight a forgotten history of the subcontinent. It also aims to bring about cultural harmony between the people of India and Pakistan.

Situated about 200 km from Taxila the ancient university site. Once these temples had been the centre of Indian education, culture and art. Gypsies, who practised music and dance here, are today scattered across the world. Following the Muslim attacks since the seventh century, this cultural centre was destroyed, but Gypsies expanded their branches - one of them reached Europe through Afghanistan.

The Katasraj temple complex is believed to have some links with the Pandavas. Legend has it that the dialogue between Yudhisthir and Yaksh took place beside a pond situated in the complex. Its oldest monument is the Satghara series of temples, which according to several legends was built during the Mahabharata time.

Today, these temples have turned into ruins. After Partition, the number of devotees visiting these temples reduced drastically and the state of these temples deteriorated over the years. Later, the Punjab province of Pakistan chalked out a scheme for the restoration of the temple complex, for which the Indian Government had also contributed.

The author got met several Pakistani archaeologist; the most enthralling encounter, however, was with a young engineer, Aamir Shehzad, who conveyed his displeasure over Pakistani ignorance about Hindu religious details. He claimed that the archeologist there didn't possess adequate knowledge about Hinduism. In the process several models of ancient architecture got destroyed, he lamented.

Through this book, the author wants people to not only know about Katasraj, but also spread the awareness about preserving the ancient Indian heritage. Jha believes, quite rightly, that any such effort can help India and Pakistan rediscover their historical unity,

Book Reviews (contd.)

besides mitigating their existing politico-religious bitterness.

-Deepak Kumar Jha
Courtesy- The Pioneer

Devdutt Pattanaik : Jaya-An Illustrated Retelling of the Mahabharata, Penguin India, Price Rs. 499/-

Vyasa narrated the great *itihasa* ('history'), but it was received differently by each of his listeners - Ganesha, Jaimini, Vaisampayana and Suka. Such is the legacy of antiquity. And we, the readers today, also accept and interpret units of the story in our individual way. Hence Rama's exile, Draupadi's *cheer haran* (disrobing), or Shakuntala's abandonment and other key episodes have gathered separate texualities and multiple perspectives. In a remarkable act of abbreviation and editing Pattanaik has captured the rich diversity of the *Mahabharata* while retaining its core.

The dilemma of deserved and underserved kingship reaches a crescendo in the final chapters of *Jaya*. It is known by most that the Kauravas attain *swarga* while the Pandavas except Yudhistira, are consigned to *naraka*. But why? The debate over *dharma* is nowhere more poignant. The story-telling sage explains "Vijay is material victory where there is a loser. Jaya is spiritual victory where there are no losers in Kurukshetra there was Vijaya but not Jaya. But when Yudhistira overcame his rage and forgave the Kauravas unconditionally, there was Jaya. This is the true ending of the tale, hence the title."

-Malashri Lal is professor in the Department of English, University of Delhi. She has co-edited In Search of Sita: Revisiting Mythology.

Courtesy-The Mail Today

Zeenat Shaukat Ali : Winning the peace - A quest

What role does Islam actually play in edging these conflicts? What are the legal tenets of jihad according to the Quran?

If Islam is a peaceful religion, one that shies away from promoting violence, why is it that it increasingly gets engulfed by violence? Finger-point at Islam, in the same manner in which communism was demonised during the Cold War, she says, adding that it is now political Islam that carries the brunt. Further, Shaukat Ali says there exists a small segment of society, the so-called military-industrial complex, that finds conflicts lucrative and Islam is an innocent bystander that gets dragged into them.

Shuakat Ali posed the questions of the book *Winning the Peace: A Quest* the question was debated at the launch of the book by Salman Khurshid, Admiral Ramdasst Farooq Abdullah.

-Alia Allana
The Indian Express

AG Noorani : Jinnah and Tilak-Comrades in the Freedom Struggle, Oxford University Press, Karachi, pp. 465 (HB), Rs. 795/-

This is as good a study of Jinnah as any that has been written in the past, except that Noorani shows little understanding of the emotional situation in India in the thirties that made Gandhi and Nehru what they were. Gandhi, Nehru, Patel were as much victims of their times as was Jinnah. Each reflected the time in which he lived and cannot be blamed. By all means defend Jinnah, but the damage he did in the final analysis is unforgiveable. His ego not only damned him but it destroyed India and has kept up Hindu-Muslim tension alive for over six decades. Jinnah stands condemned.

No excuse, that Jinnah has the blood of millions on his hands which he cannot wipe off, Sad, but true. The usefulness of the book is enhanced by appendices running into 200 pages, and very useful and significant appendices they make. But one question remains: why was the book published in Pakistan and not in India? What was OUP afraid of?

-MV Kamath
Courtesy-The Organiser

Amit Pasricha : The Sacred India Book, Shoestring, p. 224, Price Rs. 10,000/-

Book offers a panoramic view of India and its spiritual beliefs. Known for his grandiose, large format books, Amit Pasricha has pulled out all the stops for his latest venture, *The Sacred India Book (Shoestring, Rs 10,000)*. The glossy 224 pages book comes with over 100 panoramic photographs.

-Georgina Maddox
The Indian Express

Documentation

'India is not simply emerging, India has already emerged'

-US President Barack H Obama, Central Hall of Parliament, Monday, November 8

I want every Indian citizen to know: the United States will not simply be cheering you on from the sidelines. We will be right there with you, shoulder to shoulder. Because we believe in the promise of India. And we believe that the future is what we make it.

For in Asia and around the world, India is not simply emerging; India has already emerged. My confidence in our shared future is grounded in my respect for India's treasured past - a civilisation that has been shaping the world for thousands of years. Indians unlocked the intricacies of the human body and the vastness of our universe. And it is no exaggeration to say that our information age is rooted in Indian innovations - including the number zero.

An ancient civilization of science and innovation. A fundamental faith in human progress. And despite the skeptics who said that this country was simply too poor, too vast, too diverse to succeed, you surmounted over whelming odds and became a model to the world.

The United States seeks security - the security of our country, allies and partners. We seek prosperity - a strong and growing economy in an open international economic system. We seek respect for universal values. And we seek a just and sustainable international order that promotes peace and security by meeting, global challenges through stronger global cooperation.

We need to forge partnerships in high-tech sectors like defence and civil space. So we have removed Indian organization from our so-called "entity list".

Documentation

We can pursue joint research and development to create green jobs; give Indians more access to cleaner, affordable energy.

Together, we can strengthen agriculture. Cooperation between Indian and American researchers and scientists sparked the Green Revolution.

Together, we're going to improve Indian weather forecasting systems before the next monsoon season.

And it's why, as strong and resilient societies, we refuse to live in fear, we will not sacrifice the values and rule of law that defines us, and we will never waver in the defence of our people.

The United States will not abandon the people of Afghanistan - or not region - to the violent extremist who threaten us all.

Our strategy to disrupt, dismantle and defeat Al Qaeda and its affiliates has to succeed on both sides of the border. That is why we have worked with the Pakistani government to address the threat of terrorist networks in the border region.

Like your neighbours in South-East Asia, we want India to not only "look East", we want India to "engage East" - because its will increase the security and prosperity of all our nations.

I can say today - in the years ahead, I look forward to a reformed UN Security Council that includes India as a permanent member.

We're going to show that democracy, more than any other from of government, delivers for the common man - and woman.

And we believe that when countries and cultures put aside old habits and attitudes that keep people apart, when we recognise our common humanity, then we can begin to fulfil the aspirations we share. It's a simple lesson contained in that collection of stories which has guided Indians for centuries - the *Panchtantra.* And it's the spirit of the inscription seen by all who enter this great hall: "That one is mine and the other a stranger is the concept of little minds. But to the large-hearted, the world itself in their family."

This is the story of India; it's the story of America - that despite their differences, people can see themselves in one another, and work together and succeed together as one proud nation. And it can be the spirit of the partnership between our nations _ that even as we honour the histories which in different times kept us apart, even as we preserve what makes us unique in a globalized world, we can recognise how much we can achieve together.

Thank you *Jai Hind!*, and long live the partnership between India and the Untied States.

(*Excepted from Mr Obama's speech in the Central Hall of Parliament on Monday, November 8, 2010.*)

Letter

Congress and its future

While speaking before the 2nd Round Table Conference in 1931 in London, Gandhi ji has said - "The Congress ... is the oldest political organisation we have in India ... It represents no particular community, no particular class, no particular interest. ... Above all, the congress represents in its essence, the dumb. Semi-starved millions scattered over the length and breadth of the land in its seven hundred thousand villages." On the same occasion he said that - "congress knows no distinction of race, colour or creed; its platform is universal."

One wonders it the presently congress party is still the same as conceived by Mahatma Gandhi? The party is celebrating its existence of 125 years.

What is known as the last will and testament of Mahatma Gandhi which he prepared just a day before his murder, on 30th January, 1948, he has asked the congress to desolve it self as "......... in its present shape and form, i.e. as a propaganda vehicle and parliamentary machine. (the congress) has outlived it use. India has still to attain social, moral and economic independence it terms of the seven hundred thousand villages as distinguished from its cities and towns." Gandhi ji therefore, suggested in his last will to disband the existing congress organisation and 'flower' into a Lok Sevak Sangh. He elaborated the rules for such an organisation.

He hoped that such an organisation would make villagers self-contained and self-supporting through their agriculture and handicrafts. His concept of a village was like of "an oceanic circle" where the village would be self sufficient and would produce locally what were required by the folks of that particular village.

On several other occasions, Gandhi ji has talked about the way the congress party was going from the ideals of its original conceptualizes. He names them as Allian Oclavius Hume, Pherozeshah Mehta, Dr Annie Besant and Dadabhai Naoroji.

On the question as to how the congress ministers would discharge them selves, Ghandhi ji has very clearly mentioned that **'ministership is not a prize'**. He raised the question of disparity between the salaries of a minister and a chaprasi and had asked as it "**why should a minister draw Rs 1,500/- and a chaprasi or a teacher Rs. 15/- per month?**"

He was worried about the hideous inequality between the rich and the poor and lower services and higher services. As back as 1938, Gandhi ji has talked about the **'corruption in congress ranks**'. (Harijan, 23.4 1938, p. 88).

Perhaps the modern makers of the party who sevear by Gandhi ji, would read about thought on the party.

-Dr. L. N. Mittal
H-883, Housing Board Colony
MORENA- 476 001

RNI No. 72478/99

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

	पुस्तक का नाम	मूल्य
	श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें	
1.	**विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति**	95.00
2.	**स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति**	90.00
	श्री पुरुषोत्तम द्वारा लिखित पुस्तकें	
3.	**इस्लाम के सैनिक**	20.00
4.	**मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं**	30.00
5.	**तालिबान इस्लाम और शान्ति**	25.00
6.	**भारत में पाकिस्तान की आइ.एस.आई. की घातक गतिविधियां**	15.00
	लेखक.: कर्नल श्याम कुमार,अनुवाद:डॉ. युद्धवीर सिंह	
7.	**हमारे मूल कर्तव्य**	80.00
	लेखक : डॉ. विजयनारायण मणि त्रिपाठी	
8.	**भारत में सेक्युलर राजनीति**	60.00
9.	**हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में**	75.00
	लेखक : डॉ. कैलाश चन्द्र	
10.	**राम वन गमन स्थल : *डॉ.रामअवतारशर्मा***	25.00
11.	**हिन्दुस्थान में मदरसे : *श्रीदेवेन्द्रकुमार मित्तल***	120.00
12.	**गीतापदार्थकोष**	175.00
	ले.महात्मागाँधीजीएवंडॉ.योगेन्द्रपालआनन्द	
13.	**The Nefarious Activities of Pak's I.S.I.**	15.00
	लेखक : कर्नल श्याम कुमार	
	श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल द्वारा रचित पुस्तकें	
14.	**Minorities and Social Justice: Problems&Policy Options**	20.00
15.	**The Glory that is Hindutva**	10.00
16.	Striving for progress of self destruction	10.00
17.	And You shall be set free (हिन्दी-अंग्रेजी)	20.00

अन्य प्रकाशन

1.	माँ की पुकार : श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल	
2.	छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा *: श्री कृष्णस्वामी*	15.00
3.	हिन्दू नाम-तथ्य और सत्य *:स्वामीविज्ञानानंद*	20.00
4.	क्या हिन्दू मिट जाएगा *: श्रीसच्चिदानंदचतुर्वेदी*	90.00
5.	राष्ट्रवाद और भारतीय इतिहास का विकृतिकरण *: डॉ.नवरतनएस.राजाराम*	15.00
6.	ईसाइयत का भारत को निगलने का कुचक्र *: डॉ.नवरतनएस.राजाराम*	10.00
7.	आधुनिक युग में इस्लाम : भ्रम और सच *: डैविडफ्राउले(वामदेवशास्त्री)*	10.00
8.	हिन्दुत्व और राष्ट्रोत्थान *: डैविडफ्राउले(वामदेवशास्त्री)*	10.00
9.	सफेद चोला काला दिल *: श्रीमोहनजोशी*	40.00
10.	Secularism Betrayed Secularism distorted Hypocrisy of Secularism *: Sh. Anandshankar Pandya*	70.00
11.	Muhammad and the rise of Islam *: Sh.D.S.Margoliouth*	60.00
12.	Select Hindu name : *Sh. Hari Babu Kansal*	90.00
13.	Imperialist Character of Islam : *Sh. P.R.Kundu*	20.00
14.	Vandematrum Album : *Mrs. Padma Sundaram*	75.00
15.	Don't say we didn't warn you great thinkers on Islam *: Rana Pratap Roy*	60.00
16.	Muslim Politics in Secular India : Hamid Dalwai	60.00
17.	The real patriots of Hindustan *- Dr. Madhuri Madhok & Dr. R.N.Gupta*	30.00

श्री अनवर शेख द्वारा रचित पुस्तकें :-

इस्लाम : कामवासना और हिंसा (हिन्दी अनुवाद)	100.00
इस्लाम-अरब साम्राज्यवाद	60.00
जिहाद के प्रलोभन : सैक्स और लूट	10.00
Why Muslims Destroy Hindu Temples	10.00
Islam, Sex & Violence	85.00
Islam	15.00
Islam The Arab Imperialism	60.00
Quran	25.00
Islam & Terrorism	195.00

श्री जयदीप सेन द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारत में जिहाद	15.00
Jihad in India	25.00

श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारतीय इतिहास का विकृतिकरण	60.00

श्री कृष्णवल्लभ पालिवाल द्वारा रचित पुस्तकें :-

इस्लाम ईसाइयत और हिन्दू धर्म	20.00
हिन्दू जागरण -क्यों और कैसे ?	60.00
आओ राष्ट्र रक्षा में जुट जाएं	2.00
भारतीय महापुरुषों की दृष्टि में इस्लाम	25.00
जिहादियों को जन्नत-केवल कियामत बाद	20.00
मैक्समूलर द्वारा वेदों का विकृतिकरण : क्या, क्यों और कैसे	40.00
जिहाद	30.00
Challenges before the Hindus	20.00
Two faces of Jihad	20.00
The meaning of Jihad	10.00
Max Muller- A Secular Christian Missionary & Distorter of Vedas	20.00
Jannat - A miracle for Muslims	5.00
Jehad in the way of Allah	30.00
Jehad and Jannat in Hadiths	30.00
Eminent Indians on Islam	40.00

श्री पुरुषोत्तम द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारतीय मुलसमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने	25.00
सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण	10.00
भारत के इस्लामीकरण के चार चरण	100.00

बुक-पोस्ट

सेवा में,

____

____

____

____

____

____

प्रेषक : सांस्कृतिक गौरव संस्थान
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 022

संस्थान की वेबसाइट देखें - <www.hindusthangaurav.com>